وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتَعْمَلْ صَٰلِحًا نُّؤْتِهَآ أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾

(३१) तथा तुम में से जो कोई भी अल्लाह का तथा उसके रसूल का आज्ञापालन करेगी तथा सत्कर्म करेगी हम उसे दोगुना बदला देंगे,[1] तथा उसके लिए हमने अति उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

يَٰنِسَآءَ ٱلنَّبِىِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ ٱلنِّسَآءِ إِنِ ٱتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِٱلْقَوْلِ فَيَطْمَعَ ٱلَّذِى فِى قَلْبِهِۦ مَرَضٌ وَقُلْنَ

(३२) हे नबी की पत्नियो ! तुम साधारण स्त्रियों के समान नहीं हो,[2] यदि तुम संयम बरतो तो कोमल भाव से बात न करो कि जिसके दिल में रोग हो वह कोई कुविचार करे,[3] परन्तु

---

[1]अर्थात जिस प्रकार पाप का दण्ड दोगुना होगा पुण्य का बदला भी दुगुना होगा। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ إِذًا لَّأَذَقْنَٰكَ ضِعْفَ ٱلْحَيَوٰةِ وَضِعْفَ ٱلْمَمَاتِ ﴾

"फिर तो हम भी आपको दुगुनी यातना दुनिया की चखाते तथा दुगुनी ही मृत्यु की।" (सूर: बनी इस्राईल-७५)

[2]अर्थात तुम्हारी स्थिति एवं पद साधारण महिलाओं की तरह नहीं हैं बल्कि अल्लाह ने तुम्हें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी होने का जो सौभाग्य प्रदान किया है, उसके कारण तुम्हें विशेष स्थान प्राप्त है तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भाँति तुम्हें भी मुसलमानों के लिए आदर्श बनना है। अत: उन्हें उनके स्थान एवं पद से सचेत करके उन्हें कुछ निर्देश दिये जा रहे हैं। इससे सम्बोधित यद्यपि पवित्र पत्नियाँ हैं, जिन्हें ईमानवालों की माताऐं कहा गया है परन्तु वाक्य शैली के अनुसार साफ स्पष्ट है कि उद्देश्य समस्त मुसलमानों की महिलाओं को समझाना तथा चेतावनी देना है। इसलिए यह निर्देश सभी मुसलमान महिलाओं के लिए है।

[3]अल्लाह तआला ने जिस प्रकार महिलाओं के अस्तित्व के अन्दर पुरूषों के लिए काम आकर्षण रखा है। (जिसकी सुरक्षा के लिए विशेष निर्देश दिये गये हैं ताकि महिला पुरूष के लिए भ्रष्टाचार का कारण न बने) उसी प्रकार अल्लाह तआला ने महिलाओं की आवाज़ में भी प्राकृतिक रूप से आकर्षण, सरलता एवं कोमलता रखी है, जो पुरूष को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इसलिए इस आवाज़ के लिए भी यह निर्देश दिया गया कि पुरूषों से बातचीत करते समय विशेष रूप से ऐसी भाषा शैली का प्रयोग करो कि कोमलता एवं सरलता के स्थान पर कुछ कड़ाई एवं निरसता हो, ताकि कोई बुरा हृदय बात के अंदाज़ से तुम्हारी ओर आकर्षित न हो तथा उनके दिल में कुविचार न उत्पन्न हो।

قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝٣٢

नियमानुसार बात करो ।[1]

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ ۖ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۝٣٣

(३३) तथा अपने घरों में स्थायी रूप से रहो,[2] तथा प्राचीन अज्ञानकाल की भाँति अपने श्रृंगार (सौंदर्य) का प्रदर्शन न करो, [3] तथा नमाज़ स्थापित करती रहो एवं ज़कात देती रहो तथा अल्लाह एवं उसके रसूल का आज्ञा पालन करो[4] अल्लाह (तआला) यही चाहता है कि हे नबी की घरवालियो [5] तुमसे वह हर

---

[1]अर्थात यह नीरसता केवल भाषा शैली में ही हो, मुख से ऐसे शब्द न निकालो जो सामान्य नियम तथा स्वभाव के विपरीत हो। इनको إن اتقيتن कहकर संकेत कर दिया कि यह बात तथा अन्य निर्देश जो आगे हैं संयमी महिलाओं के लिए है, क्योंकि उन्हें ही यह चिन्ताशून्य वंचित हैं, उन्हें इन निर्देशों से क्या सम्बन्ध तथा वह कब इन निर्देशों की चिन्ता करती हैं ?

[2]अर्थात टिक कर रहो तथा अनावश्यक घर से बाहर न निकलो। इसमें स्पष्ट कर दिया कि स्त्री का कार्य क्षेत्र राजनीति एवं शासन नहीं, आर्थिक झमेले भी नहीं बल्कि घर के अन्दर रहकर गृहस्थी के कार्य पूरा करना है।

[3]इसमें घर से बाहर निकलने के शिष्टाचार बता दिये कि यदि बाहर जाने की आवश्यकता हो तो बनाव-श्रृंगार करके अथवा ऐसे ढंग से जिससे तुम्हारा बनाव-श्रृंगार प्रकट हो रहा हो, न निकलो जैसे बेपर्दा होकर जिससे तुम्हारा सिर, मुख, बाँह तथा छाती आदि लोगों को दर्शन का आमन्त्रण दे। बल्कि बिना सुगन्ध लगाये सादे वस्त्र में पर्दे से निकलो। تبرج बेपर्दा तथा सज धज के प्रदर्शन को कहते हैं। कुरआन ने स्पष्टकर दिया है कि यह تبرج अज्ञानता है जो इस्लाम से पूर्व थी तथा भविष्य में भी जब कभी इसे धारण किया जायेगा, यह अज्ञानता ही होगी, इस्लाम से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, चाहे इसका नाम कितना ही आर्कपक एवं सुन्दर रख लिया जाये।

[4]पिछले निर्देश बुराई से बचने के संदर्भ में थे, यह निर्देश पुण्य धारण करने से सम्बन्धित हैं।

[5]अहले बैत से तात्पर्य कौन हैं ? इसके निर्धारण में कुछ मतभेद है। कुछ ने पवित्र पत्नियाँ तात्पर्य लिया है, जैसाकि यहाँ कुरआन करीम के शब्दों से स्पष्ट हो रहा है। कुरआन ने यहाँ पवित्र पत्नियों को ही अहले बैत कहा है। कुरआन के अन्य स्थान पर भी पत्नी को अहले बैत कहा है, जैसे सूरः हूद आयत संख्या ७३ में। इसलिए पवित्र पत्नियों

(प्रकार की) अशुद्धता को दूर कर दे तथा तुम्हें अत्यन्त पवित्र कर दे।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿٣٤﴾

(३४) तथा तुम्हारे घरों में अल्लाह (तआला) की जो आयतें तथा रसूल की हदीसें पढ़ी जाती हैं, उनको याद करती रहो,[1] निश्चय अल्लाह (तआला) सुक्ष्मदर्शी सूचित हैं।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ

(३५) नि:संदेह मुसलमान पुरूष एवं मुसलमान महिलायें,[2] ईमानदार पुरूष एवं ईमानदार

का अहले बैत होना क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट है। कुछ लोग, कुछ कथनों के आधार पर अहले बैत का सम्बन्ध केवल आदरणीय अली, आदरणीया फ़ातिमा तथा आदरणीय हसन एवं हुसैन से मानते हैं तथा पवित्र पत्नियों को इससे अलग समझते हैं जबकि प्रथम लोग इन चार सहचरों को इससे निष्कासित समझते हैं जबकि मध्यम मार्ग तथा संतुलित बात यह है कि दोनों ही अहले बैत हैं। पवित्र पत्नियाँ तो पवित्र क़ुरआन के इन शब्दों के कारण तथा दामाद एवं सन्तान उन कथनों के आधार पर जो सहीह हदीस से सिद्ध हैं, जिनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको अपनी चादर में लेकर फ़रमाया कि हे अल्लाह ! ये मेरे अहले बैत हैं, जिसका अर्थ यह होगा कि यह भी मेरे अहले बैत से हैं अथवा यह प्रार्थना है कि हे अल्लाह इन्हें भी पवित्र पत्नियों की भाँति मेरे अहले बैत में सम्मिलित कर ले। इस प्रकार सभी तर्कों एवं प्रमाणों में सामन्जस्य हो जाता है। (अन्य जानकारी के लिए देखो फ़तहुल क़दीर शौकानी)

[1]अर्थात इनके अनुसार कर्म करो। हिक्म: से तात्पर्य हदीस हैं। इस आयत से तर्क देते हुए ज्ञानियों ने कहा है कि हदीस भी क़ुरआन की भाँति पुण्य के विचार से पाठ की जा सकती है। इसके अतिरिक्त यह आयत पवित्र पत्नियों के अहले बैत होने को प्रमाणित करती है, इसलिए कि प्रकाशना का अवतरण जिसकी चर्चा इस आयत में है पवित्र पत्नियों के घरों में ही होता था, विशेष रूप से आदरणीय आएशा के घर में, जैसाकि हदीस में है।

[2]आदरणीया उम्मे सलमा तथा कुछ अन्य सहाबियात (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ईमान के साथ दर्शन करने वाली वे महिलायें जिनका निधन भी ईमान पर हुआ) ने कहा कि क्या बात है कि अल्लाह तआला प्रत्येक स्थान पर पुरूषों को ही सम्बोधित करता है, महिलाओं से नहीं। इस पर यह आयत अवतरित हुई। (मुसनद अहमद ६\३०१\ तिर्मिज़ी संख्या ३२११) इसमें महिलाओं के सांत्वना का प्रबन्ध कर दिया गया है, वरन् समस्त आदेशों में पुरूषों के साथ महिलायें भी सम्मिलित हैं सिवाय उन विशेष आदेशों के जो केवल महिलाओं के लिए हैं। इस आयत से तथा अन्य आयतों से

وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۵﴾

महिलायें, आज्ञापालन करने वाले पुरूष एवं आज्ञापालन करने वाली महिलायें, सत्यवादी पुरूष एवं सत्यवादी महिलायें, धैर्य वाले पुरूष एवं धैर्य रखने वाली महिलायें, विनती करने वाले पुरूष एवं विनती करने वाली महिलायें, दान करने वाले पुरूष एवं दान करने वाली महिलायें, व्रत (रोज़े) रखने वाले पुरूष एवं व्रत (रोज़े) रखने वाली महिलायें, अपनी इंद्रियों की रक्षा करने वाले पुरूष एवं अपनी इन्द्रियों की रक्षा करनेवाली महिलायें तथा अत्याधिक अल्लाह का स्मरण करने वाले तथा करने वालियाँ, इन सबके लिए अल्लाह (तआला) ने विस्तृत मोक्ष एवं महान पुण्य तैयार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ

(३६) तथा (देखो) किसी मुसलमान पुरूष तथा महिला को अल्लाह तथा उसके रसूल के निर्णय के पश्चात अपनी किसी बात का कोई अधिकार शेष नहीं रह जाता।[1] (याद रखो !)

स्पष्ट है कि इबादत एवं अल्लाह के आज्ञापालन तथा आख़िरत के पद एवं प्रतिष्ठा में पुरूष एवं स्त्री के मध्य कोई अन्तर नहीं है। दोनों के लिए समान रूप से ये मैदान खुला है तथा दोनों समान रूप से पुण्य एवं प्रतिफल कमा सकते हैं। लिंग के आधार पर उनमें कमी अथवा अधिकता नहीं की जायेगी। इसके अतिरिक्त मुसलमान तथा ईमानवालों के अलग-अलग वर्णन से यह स्पष्ट हो गया है कि इन दोनों में अन्तर है। ईमान की श्रेणी इस्लाम से उच्च है, जैसाकि क़ुरआन तथा हदीस के अन्य प्रमाण भी इसकी पुष्टि करते हैं।

[1]यह आयत आदरणीया ज़ैनब के विवाह के विषय में अवतरित हुई थी। आदरणीय ज़ैद बिन हारिसा मूल रूप से अरब थे, परन्तु किसी ने उन्हें बाल्यावस्था में ही पकड़ कर दास बनाकर बेच दिया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आदरणीया ख़दीजा के विवाह के पश्चात आदरणीया ख़दीजा ने उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपहार स्वरूप भेंट किया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें स्वाधीन करके अपना पुत्र बना लिया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके विवाह का

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾

अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल की जो भी अवज्ञा करेगा वह खुली पथभ्रष्टता में पड़ेगा।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ

(३७) तथा (याद करो) जबकि तू उस व्यक्ति से कह रहा था जिस पर अल्लाह ने भी उपकार किया तथा तूने भी कि तू अपनी पत्नी को अपने पास रख तथा अल्लाह से डर, तथा तू अपने दिल में वह बात छिपाये हुए था जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला था तथा तू लोगों से भय खाता था हालाँकि अल्लाह (तआला) इसका अधिक अधिकारी था कि तू उससे डरे, [1] तो जबकि ज़ैद ने उस

प्रस्ताव अपनी फूफी की पुत्री आदरणीया ज़ैनब के साथ रखा था, जिस पर उन्हें तथा उनके भाई को अपने पारिवारिक सम्मान के आधार पर संकोच हुआ कि ज़ैद एक स्वतन्त्र किये हुए दास हैं तथा उनका सम्बन्ध एक उच्च सम्मानित परिवार से है। इस पर यह आयत अवतरित हुई जिसका अर्थ यह है कि अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय के पश्चात किसी ईमानवाले पुरूष एवं स्त्री को यह अधिकार नहीं कि वह अपने अधिकार का प्रयोग करे बल्कि उसके लिये यह है कि वह अपनी स्वीकृति दे दे। अतः इस आयत को सुनने के पश्चात आदरणीया ज़ैनब आदि ने अपने विचारों पर हठ नहीं किया तथा उनका विवाह हो गया।

[1]परन्तु उनके स्वभाव में अन्तर था, पत्नी के स्वभाव में पारिवारिक मान एवं सम्मान रचा-बसा था जबकि ज़ैद (रज़ि अल्लाहु अन्ह) के दामन पर ग़ुलामी का धब्बा था, उनकी आपस में अनबन रहती थी जिसकी चर्चा आदरणीय ज़ैद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करते रहते थे तथा तलाक का संकेत भी दिया करते थे। परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको तलाक देने से रोकते तथा निर्वाह करने के लिए कहते। इसके अतिरिक्त अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह सचेत भी कर दिया था कि ज़ैद की ओर से तलाक़ होकर ही रहेगी, उसके पश्चात ज़ैनब का विवाह आपके साथ कर दिया जायेगा ताकि अज्ञानकाल की उस रीति का खण्डन कर दिया जाये कि मुख बोला पुत्र, धार्मिक विधान में वास्तविक पुत्र के समान नहीं होता तथा उसके द्वारा तलाक़ दी हुई महिला से विवाह मान्य है। आयत में इन्हीं बातों की ओर संकेत है। आदरणीय ज़ैद पर अल्लाह का यह उपहार था कि उसने इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य दिया तथा दासता से मुक्ति दिलाई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾

स्त्री से अपनी आवश्यकता पूरी कर ली।[1] हमने उसे तेरे विवाह में दे दिया[2] ताकि मुसलमानों पर अपने लेपालकों की पत्नियों के विषय में किसी प्रकार का संकोच न रहे, जबकि वह अपनी आवश्यकता उनसे पूरी कर लें[3] अल्लाह का (यह) आदेश होकर ही रहने वाला था।[4]

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ

(३८) जो वस्तुयें अल्लाह (तआला) ने अपने नबी के लिए उचित (मान्य) की हैं, उनमें नबी पर कोई आपत्ति नहीं।[5] (यही) अल्लाह

उपकार उन पर यह था कि उनको धार्मिक शिक्षा दी, उनको स्वतन्त्र करके अपना पुत्र बना लिया तथा अपनी फूफी उमैमा: बिन्त अब्दुल मुत्तलिब की पुत्री से उनका विवाह करा दिया। दिल में छिपाने वाली बात यही थी जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदरणीया ज़ैनब से विवाह के विषय में प्रकाशना द्वारा बतायी गयी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम डरते इस बात से थे कि लोग कहेंगे कि अपनी बहू से विवाह कर लिया। जबकि अल्लाह को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा इस रीति को समाप्त करना था तो लोगों से डरने की आवश्यकता नहीं थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह भय यद्यपि स्वाभाविक था जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सचेत किया गया। प्रकट करने से यही तात्पर्य है कि यह विवाह होगा जिससे यह बात सब के ज्ञान में आ जायेगी।

[1]अर्थात विवाह के पश्चात तलाक़ दी तथा आदरणीया ज़ैनब ने इद्दत के दिन पूरे किये।

[2]यह विवाह प्रचलन के विरूद्ध केवल अल्लाह के आदेश से सम्पन्न हो गया, विवाह मंत्र के पाठ, अभिभावक, वकील, गवाह तथा महर के बिना ही।

[3]यह आदरणीया ज़ैनब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह का कारण है कि भविष्य में कोई मुसलमान इस विषय में संकोच का आभास न करे तथा आवश्यकतानुसार गोद लिये पुत्र की तलाक़ दी हुई पत्नी से विवाह किया जा सके।

[4]अर्थात पूर्व से ही अल्लाह के ज्ञान में जो था वह हर दशा में पूरा होना था।

[5]यह उसी ज़ैनब के विवाह की घटना की ओर संकेत है, चूँकि यह विवाह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उचित (वैध) था। इसलिए इसमें कोई पाप तथा संकीर्णता की बात नहीं है।

فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا ﴿٣٨﴾

का नियम उनमें भी रहा जो पहले हुए[1] तथा अल्लाह (तआला) के कार्य अटल रूप से निर्धारित किये हुए हैं।[2]

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾

(३९) ये सब ऐसे थे कि अल्लाह (तआला) के आदेश पहुँचाया करते थे एवं अल्लाह ही से डरते थे तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी से भी नहीं डरते थे,[3] तथा अल्लाह (तआला) हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है।[4]

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ

(४०) (लोगो), तुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नहीं,[5] परन्तु आप अल्लाह (तआला) के रसूल

---

[1]अर्थात विगत अम्बिया भी इस प्रकार का कार्य करने में कोई संकोच नहीं करते थे, जो अल्लाह की ओर से उन पर अनिवार्य किये जाते थे, चाहे सामुदायिक तथा सामाजिक रीति-रिवाज उनके विपरीत ही होते।

[2]अर्थात विशेष कारण एवं सुनीति पर आधारित होते हैं, सांसारिक शासकों की भाँति सामयिक एवं क्षणिक आवश्यकता पर आधारित नहीं होते। इसी प्रकार उनका समय भी निर्धारित होता है, जिसके अनुसार घटित होते हैं।

[3]इसलिए न कोई भय अथवा प्रभाव उन्हें अल्लाह का संदेश पहुँचाने में रूकावट बनता था न अपमान एवं धिक्कार की उन्हें चिन्ता होती थी।

[4]अर्थात प्रत्येक स्थान पर वह अपने ज्ञान एवं शक्ति के अनुसार व्याप्त है, इसलिए वह अपने भक्तों की सहायता के लिए पर्याप्त है तथा अल्लाह के धर्म के प्रचार-प्रसार में उन्हें जो कठिनाईयाँ हैं, उनमें वह उनकी सहायता करता है तथा शत्रुओं के बुरे उद्देश्यों तथा षड़यन्त्रों से उन्हें बचाता है।

[5]इसलिए वह ज़ैद बिन हारिसा के भी पिता नहीं हैं, जिस पर उन्हें निन्दा का लक्ष्य बनाया जा सके कि उन्होंने अपनी बहू से विवाह क्यों कर लिया ? बल्कि एक ज़ैद ही क्या वह किसी भी पुरूष के पिता नहीं हैं, क्योंकि ज़ैद तो हारिसा के पुत्र थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो उन्हें मुँह बोला पुत्र बना रखा था तथा अज्ञानी नियमों के अनुसार उन्हें ज़ैद बिन मोहम्मद कहा जाता था। वास्तव में वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सगे पुत्र नहीं थे। इसीलिए﴿ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ﴾के अवतरित होने के पश्चात उन्हें ज़ैद पुत्र

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾

हैं तथा समस्त नबियों में अन्तिम हैं,[1] तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿٤١﴾

(४१) हे मुसलमानो ! अल्लाह तआला का स्मरण अत्याधिक करो।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿٤٢﴾

(४२) तथा सुबह-शाम उसकी पवित्रता का वर्णन करो।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

(४३) वही है जो तुम पर अपनी दया भेजता है तथा उसके फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए दया की प्रार्थना करते हैं) ताकि वह तुम्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये। और अल्लाह (तआला) मुसलमानों पर अत्यन्त दयालु है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ

(४४) जिस दिन ये अल्लाह (तआला) से मिलेंगे उनका स्वागत सलाम से होगा,[2] उनके

हारिसा ही कहा जाता था। इसके अतिरिक्त आदरणीया ख़दीजा (رضي الله عنها) से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन पुत्र क़ासिम, ताहिर तथा तैयब हुए तथा एक इब्राहीम मारिया क़िब्तिया के गर्भ से हुआ। परन्तु ये सभी बाल्यावस्था में ही मर गये, उनमें से कोई भी पूर्ण व्यस्क आयु को नहीं पहुँचा। इस आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपनी संतान में कोई भी पुरूष नहीं रहा जिसके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पिता हों। (इब्ने कसीर)

[1] خاتَم अरबी भाषा में मोहर (मुद्रा) को कहते हैं तथा मोहर अन्तिम क्रिया को कहा जाता है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नुबूव्वत एवं रिसालत का अन्त हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात जो भी नबूअत अथवा रिसालत का दावा करेगा वह झूठा तथा दज्जाल होगा। हदीसों में इस विषय को विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है तथा इस पर सम्पूर्ण सम्प्रदाय सहमत है। क़ियामत के निकट आदरणीय ईसा धरती पर आयेंगे जो सहीह तथा निरन्तर कथन से सिद्ध है। वह नबी के रूप में नहीं आयेंगे बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी बनकर आयेंगे। इसलिए उनका धरती पर आना नबूअत के अन्त के विरूद्ध नहीं है।

[2] अर्थात स्वर्ग में फ़रिश्ते ईमानवालों को अथवा ईमानवाले एक-दूसरे को सलाम करेंगे।

وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

लिए अल्लाह (तआला) ने सम्मानित बदला तैयार कर रखा है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾

(४५) हे नबी ! वास्तव में हमने ही आपको (रसूल) साक्षी, शुभसूचक तथा सचेत करने वाला बनाकर भेजा है।[1]

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾

(४६) तथा अल्लाह के आदेश से उसकी ओर बुलाने वाला तथा प्रकाशमान दीप।[2]

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾

(४७) तथा आप ईमानवालों को शुभसूचना सुना दीजिए कि उनके लिए अल्लाह (तआला) की ओर से बहुत बड़ा अनुग्रह है।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾

(४८) तथा काफ़िरों एवं मुनाफ़िकों का कहना न मानिए ! तथा जो दुख (उनकी ओर से) पहुँचे उसकी चिन्ता न कीजिए, अल्लाह पर भरोसा रखिये, अल्लाह काम बनाने के लिए पर्याप्त है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

(४९) हे मुसलमानो ! जब तुम मुसलमान महिलाओं से विवाह करो फिर उन्हें हाथ लगाने

---

[1]कुछ लोग شَاهِدً (शाहिद) का अर्थ साक्षात विद्यमान करते हैं जो क़ुरआन के अर्थ में परिवर्तन है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने समुदाय की गवाही देंगे, उनकी भी जो आप पर ईमान लाये तथा उनकी भी जो आपको झुठलाते रहे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईमानवालों को उनके वज़ू के अंगों से पहचान लेंगे जो चमकते होंगे। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्य नबियों (सन्देष्टाओं) की गवाही देंगे कि उन्होंने अपने-अपने समुदाय को अल्लाह का उपदेश पहुँचा दिया था तथा यह गवाही अल्लाह के प्रदान किये हुए निश्चित ज्ञान के आधार पर होगी इसलिए नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त सन्देष्टाओं को अपनी दृष्टि से देखते रहे हैं। यह विश्वास तो क़ुरआन के सूत्रों के विरूद्ध है।

[2]जिस प्रकार दीप से अंधकार दूर हो जाता है, उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा कुफ़्र तथा शिर्क (मूर्तिपूजा) के अंधकार दूर हुए। इसके अतिरिक्त इस दिव्य दीप से प्रकाश प्राप्त करके जो सम्मान व आदर प्राप्त करना चाहे कर सकता है, इसलिए कि यह दीप क़ियामत तक प्रकाशित है।

إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾

से पूर्व तलाक़ दे दो तो उन पर तुम्हारा कोई (अधिकार) इद्दत (तलाक़ के पश्चात निर्धारित समय तक की प्रतिबन्धित अवधि) का नहीं जिसकी तुम गणना करो ।[1] तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो ।[2] तथा भली-भाँति उन्हें विदा कर दो ।[3]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ إِنَّآ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَٰجَكَ

(५०) हे नबी ! हमने तेरे लिए तेरी वे पत्नियाँ उचित (वैध) कर दी हैं, जिन्हें तू उनकी महर

---

[1]विवाह के पश्चात जिन स्त्रियों से सहवास किया जा चुका हो और वह अभी युवती हो, ऐसी स्त्रियों को यदि तलाक़ मिल जाये तो उनकी "इद्दत" तीन मासिक धर्म है । (*अल-बकर:-२२८*) यहाँ उन स्त्रियों का नियम बताया जा रहा है जिनका विवाह हुआ हो किन्तु पति-पत्नी के मध्य सहवास सम्बन्ध नहीं हुआ उनको यदि तलाक़ मिल जाये तो कोई इद्दत नहीं है । अर्थात ऐसी बिना संभोग तलाक़ प्राप्त स्त्री बिना इद्दत गुज़ारे तुरन्त कहीं विवाह करना चाहे तो कर सकती है । हाँ, यदि सहवास से पहले पति का निधन हो जाये तो फिर उसे चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी । (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर) स्पर्श करना अथवा हाथ लगाना इंगित है सहवास (संभोग) से, निकाह का विशेष शब्द सहवास तथा विवाह के बंधन दोनों के लिए प्रयोग होता है । यहाँ विवाह के अर्थ में है । इसी आयत से तर्क निकालते हुए यह भी कहा गया है कि विवाह से पहले तलाक़ (सम्बन्ध-विच्छेद) नहीं क्योंकि यहाँ विवाह के पश्चात तलाक़ की चर्चा है । अत: जो धर्मविद (फ़ुकहा) यह कहते हैं कि कोई यह कहे कि यदि मैंने अमुक स्त्री से विवाह किया तो उसे तलाक़, तो उनके मत के अनुसार उस स्त्री से विवाह होते ही तलाक़ हो जायेगी ऐसे ही कुछ जो यह कहते हैं कि यदि वह यह कहे कि मैंने किसी भी स्त्री से विवाह किया तो उसको तलाक़, तो जिस स्त्री से भी विवाह करेगा तलाक़ (विवाह-विच्छेद) हो जायेगा । यह बात सही नहीं है । हदीस में भी साफ है «لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ» (इब्ने माजा) «لَا طَلَاقَ لِابْنِ آدَمَ فِيمَا لَا يَمْلِكُ» (अबू दाऊद बाबुन फ़ित्तलाक़े क़बलन निकाहे, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा एवं मुसनद अहमद २१८९), इससे स्पष्ट है कि विवाह से पहले विवाह-विच्छेद (तलाक़) एक अनर्थ कर्म है जिसका धर्म-विधान में कोई औचित्य नहीं ।

[2]यह (मुतआ), यदि महर (स्त्रीधन) निर्धारित हो तो आधी महर है अन्यथा शक्ति के अनुसार कुछ दे दिया जाये ।

[3]अर्थात उन्हें आदर व सम्मान से बिना कोई दुख पहुँचाये अलग कर दिया जाये ।

الَّتِيٓ ءَاتَيۡتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتۡ
يَمِينُكَ مِمَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَيۡكَ
وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّـٰتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ
وَبَنَاتِ خَـٰلَـٰتِكَ ٱلَّـٰتِي هَاجَرۡنَ مَعَكَ
وَٱمۡرَأَةً مُّؤۡمِنَةً إِن وَهَبَتۡ نَفۡسَهَا
لِلنَّبِيِّ إِنۡ أَرَادَ ٱلنَّبِيُّ أَن يَسۡتَنكِحَهَا
خَالِصَةً لَّكَ مِن دُونِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَۗ
قَدۡ عَلِمۡنَا مَا فَرَضۡنَا عَلَيۡهِمۡ
فِيٓ أَزۡوَٰجِهِمۡ وَمَا مَلَكَتۡ أَيۡمَـٰنُهُمۡ

(स्त्री-दान) दे चुका है [1] तथा वे दासियाँ भी जो अल्लाह (तआला) ने युद्ध में तुझे प्रदान की हैं[2] तथा तेरे चाचा की पुत्रियाँ, फूफी की पुत्रियाँ, तेरे मामा की पुत्रियाँ तथा तेरे मौसी की पुत्रियाँ भी जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की हैं,[3] तथा वह ईमानवाली महिला जो स्वयं को नबी को दान कर दे यह उस अवस्था में कि स्वयं यदि नबी भी उससे विवाह करना चाहे, [4] यह विशेष रूप से तेरे लिए ही है तथा अन्य मुसलमानों के लिए नहीं। [5] हम उसे भली-भाँति

---

[1]कुछ धार्मिक नियमों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विशेषता प्राप्त थी, जिन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विशेषता कहा जाता है। जैसे ज्ञानियों के एक गुट के मतानुसार रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी, सदका (दान) अपने लिए लेना निषेध था। इसी प्रकार कुछ विशेषताओं का वर्णन इस स्थान पर किया गया है जिनका सम्बन्ध विवाह से है।१- जिन स्त्रियों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महर दिया है, वे वैध हैं चाहे संख्या में वे कितनी ही हों तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीया सफ़िया तथा जुवैरिया का महर उनकी स्वतन्त्रता को माना था। उनके अतिरिक्त नक़द के रूप में सब का महर अदा किया था। केवल उम्मे हबीबा का महर नजाशी ने अपनी ओर से दिया था।

[2]अत: आदरणीया सफ़िया तथा जुवैरिया दासी के रूप में आयीं जिन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वतन्त्र करके विवाह कर लिया तथा रेहाना एवं मारिया क़िब्तिया दासी के रूप में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास रहीं।

[3]इसका अर्थ है जिस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत की, उसी प्रकार उन्होंने भी मक्के से मदीने हिजरत की, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी भी महिला ने हिजरत नहीं की थी।

[4]अर्थात अपने आप को दान करने वाली महिला, यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे विवाह करना चाहें तो बिना महर के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उसे अपने विवाह में लेना उचित है।

[5]यह अनुमति केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है, अन्य मुसलमानों को अनिवार्य है कि वे महर के अधिकार अदा करें तब विवाह वैध होगा।

لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

जानते हैं जो हमने उन पर उनकी पत्नियों एवं दासियों के विषय में (आदेश) निर्धारित कर रखे हैं,[1] यह इसलिए कि तुझ पर कोई आपत्ति उत्पन्न न हो ।[2] अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमाशील एवं अत्यन्त दया करने वाला है ।

تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ

(५१) उनमें से जिसे तू चाहे दूर रख दे तथा जिसे चाहे पास रख ले,[3] तथा यदि तू उनमें से भी किसी को अपने पास बुला ले जिन्हें तूने अलग कर रखा था तो तुझ पर कोई आपत्ति नहीं,[4] इसमें इस बात की अधिक आशा है कि इन (स्त्रियों) की आँखें ठंडी रहें तथा वे दुखी न हों तथा जो कुछ भी तू उन्हें दे दे उससे वे सब प्रसन्न रहें,[5] तुम्हारे दिलों में

---

[1]अर्थात विवाह के जो प्रतिबंध एवं अधिकार हैं जो हमने अनिवार्य किये हैं, जैसे चार से अधिक पत्नियाँ एक ही समय में कोई व्यक्ति नहीं रख सकता । विवाह के लिए संरक्षक, गवाह तथा महर आवश्यक है । परन्तु दासियाँ जितनी भी कोई चाहे रख सकता है, किन्तु दासियों का प्रचलन अब समाप्त हो गया ।

[2]इसका सम्बन्ध إِنَّا أَحْلَلْنَا से है अर्थात उक्त समस्त महिलाओं को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इसलिए उचित किया गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संकोच प्रतीत न हो तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी के साथ विवाह में पाप न समझें ।

[3]इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक अन्य विशेषता का वर्णन है । वह यह कि पत्नियों के मध्य क्रम निर्धारित करने का अधिकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दे दिया गया था । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसका क्रम चाहें स्थागित कर दें, अर्थात उसे साथ में रखते हुए उससे सहवास न करें तथा जिससे चाहें यह सम्बन्ध स्थापित रखें ।

[4]अर्थात जिन पत्नियों का क्रम स्थगित कर दिया था । यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाहें कि उससे सहवास किया जाये तो यह आज्ञा भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्राप्त थी ।

[5]अर्थात क्रम स्थगित होने तथा एक को दूसरी पर प्राथमिकता देने के उपरान्त भी वे प्रसन्न होंगी, दुखी नहीं होंगी तथा जितना कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾

जो कुछ है उसे अल्लाह (तआला भली-भाँति) जानता है ।[1] अल्लाह (तआला) अधिक ज्ञान वाला सहनशील है ।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ

(५२) इसके पश्चात अन्य स्त्रियाँ आपके लिए वैध (हलाल) नहीं तथा न यह (उचित है) कि उन्हें छोड़कर अन्य स्त्रियों से (विवाह करें)

से मिल जाये उस पर संतुष्ट रहेंगी । क्यों ? इसलिए कि उन्हें ज्ञात है कि संदेष्टा यह सब कुछ अल्लाह के आदेश एवं आज्ञानुसार कर रहे हैं तथा ये पवित्र पत्नियाँ अल्लाह के निर्णय पर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हैं । कुछ कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अनुमति प्राप्त होने के उपरान्त भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे प्रयोग नहीं किया तथा सिवाय आदरणीया सौदह के (कि उन्होंने अपनी बारी अपनी इच्छा से आदरणीया आयशा को प्रदान कर दिया था) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त पवित्र पत्नियों के क्रम बराबर-बराबर निर्धारित कर दिये थे । इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्तिम समय में पवित्र पत्नियों से आज्ञा लेकर रोग की अवधि आदरणीया आयशा के पास व्यतीत किये । ﴿أَن تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ﴾ का सम्बन्ध आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इसी व्यवहार से है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क्रम निर्धारण (अन्य लोगों की भाँति) यद्यपि आवश्यक नहीं था इसके उपरान्त भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्रम विभाजन को अपनाया ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों की आँखें ठंडी हो जायें, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सदव्यवहार एवं न्याय से प्रसन्न हो जायें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस विशेषाधिकार का प्रयोग नहीं किया अपितु उनकी सांत्वना एवं प्रसन्नता का प्रयोजन किया ।

[1]अर्थात तुम्हारे हृदय में जो कुछ है उनमें यह बात भी निश्चित रूप से है कि सब पत्नियों का प्रेम दिल में समान नहीं है, क्योंकि दिल पर किसी का अधिकार नहीं है । इसलिए पत्नियों के मध्य क्रम में, पालन-पोषण तथा अन्य जीवन हेतु तथा सुविधाओं में समानता आवश्यक है, जिसका प्रबन्ध मनुष्य कर सकता है । दिलों के झुकाव में समता चूँकि अधिकार ही में नहीं है । इसलिए अल्लाह तआला उस पर पकड़ भी नहीं करेगा यदि हार्दिक प्रेम किसी एक पत्नी से उसके साथ विशेष व्यवहार का कारण न हो । इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे "हे अल्लाह ! यह जो मेरा विभाजन है जो मेरे अधिकार में है, परन्तु जिस पर तेरा अधिकार है मैं उस पर अधिकार नहीं रखता, उसमें मुझे लज्जित न करना ।" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा तथा मुसनद अहमद ६/१४४)

أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ﴿٥٢﴾

यद्यपि उनका रूप अच्छा भी लगता हो[1] परन्तु जो तेरी दासियाँ हों, [2] अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَن يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ

(५३) हे मुसलमानो ! जब तक तुम्हें आज्ञा न प्रदान की जाये तुम नबी के घरों में न जाया करो खाने के लिए ऐसे समय में कि खाना पकने की प्रतीक्षा करते रहे, अपितु जब बुलाया जाये तो जाओ तथा जब खा चुको तो निकल खड़े हो, वहीं बातों में लीन न हो जाओ। नबी को तुम्हारे इस व्यवहार से कष्ट होता है। परन्तु वह तुम्हारा आदर कर जाते हैं तथा अल्लाह (तआला) सत्य का वर्णन करने में किसी की चिन्ता नहीं करता। [3] तथा जब

---

[1]अधिकार की आयत के अवतरित होने के पश्चात पवित्र पत्नियों ने सांसारिक सुख-सुविधा के साधनों को त्यागकर कठिनाई से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहना पसन्द किया था। इसका बदला अल्लाह ने यह दिया कि उन पवित्र पत्नियों के अतिरिक्त (जिनकी संख्या उस समय नौ थी) अन्य स्त्रियों के साथ विवाह करने अथवा उनमें से किसी को तलाक़ दे कर उसके स्थान पर किसी अन्य से विवाह करने से रोक दिया। कुछ कहते हैं कि बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अधिकार दे दिया गया था, परन्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई विवाह नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात दासियाँ रखने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं, कुछ धर्म विशेषज्ञों ने इससे यह भाव निकाला है कि काफ़िर दासी भी रखने की आपको अनुमति थी और कुछ ने ﴿وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ﴾ (*अल-मुम्तहिना-१०*) के अनुसार इसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिये उचित (वैध) नहीं समझा (फ़तहुल क़दीर)

[3]इस आयत के अवतरित होने का कारण यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निमन्त्रण पर सहाबा केराम उपस्थित हुए, जिनमें से कुछ खाने के पश्चात भी बैठे हुए बातें करते रहे जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विशेष कष्ट हुआ परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिष्टाचार एवं व्यवहार के कारण उन्हें जाने के लिए नहीं कहा। (सहीह बुख़ारी व्याख्या सूरतुल अहज़ाब) अत: इस आयत में भोज के शिष्टाचार सिखाये गये कि प्रथम तो तब जाओ जब भोजन तैयार हो जाये, पहले ही से धरना देकर

مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ۭ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ۭ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ۭ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿٥٣﴾

तुम नबी की पत्नियों से कोई वस्तु माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो।[1] तुम्हारे तथा उनके दिलों के लिए पूर्ण पवित्रता यही है।[2] न तुम्हें उचित है कि तुम अल्लाह के रसूल को कष्ट दो[3] तथा न तुम्हें यह वैध (उचित) है कि आपके पश्चात किसी समय भी आपकी पत्नियों से विवाह करो। (याद रखो) अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा (पाप) है।[4]

न बैठे रहो। द्वितीय भोजन समाप्त करने के तुरन्त बाद घरों को चले जाओ, वहाँ बैठे हुए बातें न करो। भोजन का वर्णन तो अवतरित होने के कारण किया गया है वरन् अर्थ तो यह है कि जब भी तुम्हें बुलाया जाये चाहे खाने के लिए अथवा किसी अन्य कार्य के लिये आज्ञा के बिना घर में प्रवेश न करो।

[1]यह आदेश आदरणीय उमर की इच्छा के अनुरूप अवतरित हुआ। आदरणीय उमर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अच्छे बुरे बहुत से लोग आते हैं, काश आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पवित्र पत्नियों को पर्दे का आदेश दें तो क्या अच्छा हो। इस प्रकार यह आदेश अल्लाह ने अवतरित किया (सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात व तफ़सीर *सूरः अल-बक़रः*, मुस्लिम बाबु फ़ज़ाईले उमर बिन ख़त्ताब)

[2]यह पर्दे का रहस्य एवं कारण है कि इससे स्त्री-पुरूष दोनों के दिल संशय एवं शंका से तथा परस्पर उपद्रव में पड़ने से सुरक्षित रहेंगे।

[3]चाहे वह किसी भी रूप में हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में बिना आज्ञा प्रवेश करना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा के बिना घर में बैठे रहना तथा बिना पर्दा पवित्र पत्नियों से बातचीत करना, ये कार्य भी कष्टदायक हैं, इनसे भी बचो।

[4]यह आदेश उन पवित्र पत्नियों के विषय में है जो मृत्यु के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह बन्धन में थीं। फिर भी जिनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहवास के पश्चात जीवनकाल में ही तलाक़ दे कर अपने से अलग कर दिया था, वह इसमें सम्मिलित हैं अथवा नहीं ? इसमें दो मत हैं। कुछ उनको भी सम्मिलित मानते हैं तथा कुछ नहीं मानते। परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी कोई पत्नी ही नहीं थी। इसलिए यह केवल एक अनुमान है। इसके अतिरिक्त तीसरा प्रकार उन स्त्रियों का है जिनसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विवाह हुआ परन्तु सहवास से पूर्व ही

إِن تُبْدُوا شَيْـًٔا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

(५४) यदि तुम किसी वस्तु को प्रकट करो अथवा छिपाये रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है।

لَّا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِىٓ ءَابَآئِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ إِخْوَٰنِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ إِخْوَٰنِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ أَخَوَٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُنَّ ۗ وَٱتَّقِينَ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾

(५५) उन महिलाओं पर कोई पाप नहीं कि वह अपने पिताओं, अपने पुत्रों एवं भाईयों, अपने भतीजों, भाँजों एवं अपनी (मेल-जोल की) महिलाओं तथा स्वामित्व के अधीनस्थ (दासी, दास) के सामने हों।[1] (महिलाओ!) अल्लाह से डरती रहो। अल्लाह तआला निःसंदेह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।[2]

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِىِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

(५६) अल्लाह (तआला) तथा उसके फ़रिश्ते इस नबी पर दरूद भेजते हैं। हे ईमानवालो! तुम (भी) इन पर दरूद भेजो तथा अधिक सलाम (भी) भेजते रहा करो।[3]

उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलाक़ दे दी। उनसे अन्य लोगों का विवाह करने में कोई मतभेद ज्ञात नहीं है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]जब महिलाओं के लिए पर्दे का आदेश अवतरित हुआ, तो फिर घर में उपस्थित निकट अथवा हर समय आने-जाने वाले सम्बन्धियों के विषय में प्रश्न हुआ कि उनसे पर्दा किया जाये अथवा नहीं। इस आयत में उन सम्बन्धियों का वर्णन है जिनसे पर्दे की आवश्यकता नहीं है। इसका विस्तृत वर्णन सूरः नूर की आयत ३१ ﴿وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ﴾ में भी गुज़र चुका है, उसे देख लीजिए।

[2]इस स्थान पर महिलाओं को अल्लाह के भय का आदेश देकर यह स्पष्ट कर दिया कि यदि दिलों में अल्लाह का भय होगा तो पर्दे का जो मूल उद्देश्य हृदय एवं दृष्टि की पवित्रता तथा सम्मान की रक्षा है वह अवश्य तुम्हें प्राप्त होगा, वरन् ऊपरी पर्दों का प्रतिबंध तुम्हें पाप में लीन होने से नहीं बचा सकेगा।

[3]इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस पद एवं गरिमा का वर्णन है, जो आकाशों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्राप्त है तथा वह यह है कि अल्लाह (तआला) फ़रिश्तों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा एवं बड़ाई करता और शांति भेजता है तथा फ़रिश्ते भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उच्च स्थान

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝٥٧

(५७) जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूल को कष्ट देते हैं उन पर दुनिया एवं आख़िरत में अल्लाह की धिक्कार है तथा उनके लिए अत्यन्त अपमानित करने वाली यातना है ।[1]

की प्रार्थना करते हैं । साथ ही साथ अल्लाह तआला ने धरती वालों को आदेश दिया कि वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलात व सलाम भेजें ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में धरती एवं आकाश दोनों लोक सम्मिलित हो जायें । हदीस में है कि सहाबा केराम ने निवेदन किया, हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ! सलाम की विधि तो हम जानते हैं । (अर्थात तहीयात में السّلام عليك أيّها النّبي पढ़ते हैं) हम लोग दरूद किस प्रकार पढ़ें, इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह दरूद इब्राहीमी बताया जो नमाज़ में पढ़ा जाता है । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अहज़ाब) इसके अतिरिक्त हदीस में दरूद के अन्य रूप भी आते हैं, जो पढ़े जा सकते हैं, इसके अतिरिक्त संक्षिप्त में 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' भी पढ़ा जा सकता है फिर भी 'अस्सलातो वस्सलामो अलैक या रसूलुल्लाह' पढ़ना इस कारण ठीक नहीं है कि इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बोधन है और ऐसे शब्दों के साथ सामान्य दरूद आप से साबित नहीं । बस केवल तहीयात में साबित है । इसलिए उसी समय उसे पढ़ना चाहिए तथा उसका पढ़ने वाला इस भ्रमपूर्ण विश्वास से पढ़ता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधे स्वयं सुनते हैं । यह विश्वास क़ुरआन एवं हदीस के विरूद्ध है, जो पुण्य नहीं, पाप है । हदीसों में दरूद का विशेष महत्व आया है । नमाज़ में इसका पढ़ना आवश्यक अथवा सुन्नत है ? ज्ञानियों का बहुमत सुन्नत होने के पक्ष में है तथा इमाम शाफ़ई एवं बहुत से ज्ञानी आवश्यक होने के पक्ष में हैं । परन्तु हदीसों से इसके आवश्यक ही होने की पुष्टि होती है । इसी प्रकार हदीस से यह भी ज्ञात होता है कि जिस प्रकार अन्तिम तशहहुद में दरूद पढ़ना आवश्यक है प्रथम तशहहुद में भी दरूद पढ़ने का वही स्थान है । इसलिए नमाज़ के दोनों तशहहुद में दरूद पढ़ना आवश्यक है ।

[1]अल्लाह को कष्ट देने का अर्थ उन समस्त कार्यों का करना है जिसको उसने अप्रिय कहा है, अन्यथा अल्लाह को कष्ट देने का कौन सामर्थ्य रखता है ? जैसे मूर्तिपूजक, यहूदी तथा ईसाई आदि अल्लाह के लिए सन्तान सिद्ध करते हैं । अथवा जिस प्रकार हदीस कुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, "आदम की संतान मुझे कष्ट देती हैं, युग को गाली देती है जबकि मैं ही युग हूँ, उसके दिन तथा रात्रि का चक्र मेरे ही आदेश से चलता है ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-जासिया, मुस्लिम किताबुल अलफ़ाज़ मिनल अदब, बाब अन्नही मिन सब्बिद्दहरे) अर्थात यह कहना कि काल या आकाश के इस चक्र ने ऐसा कर दिया यह उचित नहीं, इसलिए कि कार्य अल्लाह के हैं काल अथवा

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝

(५८) तथा जो लोग ईमानवाले पुरूषों एवं ईमानवाली महिलाओं को कष्ट दें बिना किसी अपराध के जो उनसे हुआ हो, वह (अत्यन्त) आक्षेप तथा खुले पाप का बोझ उठाते हैं ।[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ

(५९) हे नबी ! अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों से तथा मुसलमानों की महिलाओं से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें,[2] इससे तुरन्त उनकी

आकाश के नहीं । अल्लाह के रसूल को कष्ट पहुँचाना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कवि, झूठा, जादूगर आदि कहना है । इसके अतिरिक्त कुछ हदीसों से सहाबा केराम को दुख पहुँचाने तथा उनके अपमान एवं अवहेलना को भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कष्ट बताया है । धिक्कार का अर्थ अल्लाह की दया से दूरी एवं वंचित होना है ।

[1]अर्थात उनको बदनाम करने के लिए उन पर आरोप लगाना, उनका अनुचित रूप से निरादर एवं अपमान करना, जैसे कुछ गुमराह लोग सुबह-शाम सहाबा केराम को गालियाँ देते हैं तथा उनसे ऐसी बातें सम्बन्धित करते हैं जिनको उन्होंने किया ही नहीं । इमाम इब्ने कसीर कहते हैं 'वक्र हृदय राफ़जी प्रशंसित लोगों की भर्त्सना करते तथा भ्रष्ट लोगों की प्रशंसा करते हैं ।'

[2] جَلَابِيب बहुवचन है جِلْبَاب का जो ऐसी बड़ी चादर को कहते हैं जिससे पूरा शरीर छिप जाये । अपने ऊपर चादर लटकाने से तात्पर्य यह है कि अपने मुख पर इस प्रकार घूँघट निकाला जाये कि जिससे मुख का अधिकतर भाग छिप जाये तथा आँखें झुकाकर चलने पर उसे मार्ग भी दिखायी दे । भारत, पकिस्तान तथा अन्य इस्लामिक देशों में जिस नक़ाब का प्रचलन है यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में नहीं था, फिर तत्पश्चात इसमें वह सादगी नहीं रही जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहाबा केराम एवं ताबेईन के समय में थी, महिलायें अत्यन्त सादा वस्त्र पहनती थीं, बनाओ-श्रृंगार तथा वस्त्रों के प्रदर्शन का ध्यान नहीं था । इसलिए एक बड़ी चादर से भी पर्दे के उद्देश्य पूरे हो जाते थे । परन्तु बाद में यह सादगी नहीं रही । उसका स्थान शोभा एवं श्रृंगार ने ले लिया तथा महिलाओं में चमकदार वस्त्र तथा आभूषण का प्रदर्शन सामान्य हो गया, चादर से पर्दा करना कठिन हो गया तथा उसके स्थान पर विभिन्न प्रकार के नक़ाबों का चलन हो गया । यद्यपि इससे महिला को कई बार, विशेषरूप से अत्याधिक गर्मी में कुछ परेशानी भी होती है परन्तु यह तनिक सी पीड़ा धार्मिक नियमों

فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾

पहचान हो जाया करेगी फिर न कष्ट पहुँचायी जायेंगी,[1] तथा अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमा-शील एवं दयालु है।

لَئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ

(६०) यदि (अब भी) ये मुनाफ़िक़ (मिथ्याचारी) तथा वे जिनके दिलों में रोग है तथा मदीना के वे वासी जो ग़लत अफ़वाहें उड़ाने वाले हैं,[2]

की माँग के समक्ष कोई महत्व नहीं रखती। फिर भी जो महिलायें नक़ाब के स्थान पर बड़ी चादर का प्रयोग करती हैं तथा पूरे शरीर को ढाँकती तथा मुख पर उचित अर्थों में घूँघट निकालती हैं, वह निश्चित रूप से पर्दे के आदेश का पालन करती हैं, क्योंकि नक़ाब ऐसी अनिवार्य वस्तु नहीं हैं जिसे धार्मिक नियमों ने पर्दे के लिए अनिवार्य किया हो परन्तु आजकल महिलाओं ने चादर को बेपर्दा होने का साधन बना रखा है। पहले नक़ाब के स्थान पर वे चादर ओढ़ना प्रारम्भ करती हैं फिर चादर भी गायब हो जाती है, केवल दोपट्टा रह जाता है। कुछ महिलाओं को इसका भी प्रयोग कठिन प्रतीत होता है। इस परिस्थिति को देखते हुए कहना पड़ता है कि अब नक़ाब का प्रयोग ही उचित है क्योंकि जबसे नक़ाब का स्थान चादर ने ले ली है बेपर्दगी सामान्य रूप से व्याप्त हो गयी है, बल्कि महिलायें अर्धनग्नता पर गर्व करने लगी हैं। इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों एवं पुत्रियों तथा सामान्यतः ईमानवाली महिलाओं को घर से निकलते समय पर्दे का आदेश दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट है कि पर्दे का आदेश आलिमों की उत्पत्ति नहीं हैं (जैसाकि आज कल कुछ लोग कहते हैं) अथवा उसको विशेष महत्व नहीं देते, बल्कि यह अल्लाह का आदेश है जो क़ुरआन करीम के सूत्रों से सिद्ध है। इससे विमुखता, अस्वीकृति तथा बेपर्दगी की हठ कुफ़्र तक पहुँचा सकता है। दूसरी बात इससे यह ज्ञात हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक पुत्री नहीं थी जैसाकि शियों का विश्वास है बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक से अधिक पुत्रियाँ थीं। जैसाकि क़ुरआन के शब्दों से विदित होता है तथा ये चार थीं, जैसा कि इतिहास तथा संदेष्टा जीवनी एवं हदीस से सिद्ध है।

[1]यह पर्दे के रहस्य तथा उसके लाभ का वर्णन है कि इससे एक सम्मानित तथा सभ्य महिला एवं असभ्य तथा कुकर्मी महिला के मध्य पहचान होगी। पर्दे से ज्ञात होगा कि यह सम्मानित परिवार की महिला है जिससे छेड़छाड़ का किसी को साहस नहीं होगा, इसके विपरीत, बेपर्दा महिलायें असभ्य पुरूषों की दृष्टि का केन्द्र तथा उनकी कामवासना का निशाना बनेंगी।

[2]मुसलमानों का साहस कम करने के लिए मुनाफिक अफ़वाहें उड़ाया करते थे कि मुसलमान अमुक क्षेत्र में पराजित हो गये, अथवा शत्रुओं की बड़ी संख्या वाली सेना आक्रामण के लिए आ रही है आदि आदि।

فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝٦٠

रूक न जायें तो हम आपको उनके (विनाश) पर लगा देंगे फिर तो वे कुछ ही दिन आपके साथ इस (नगर) में रह सकेंगे।

مَلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ۝٦١

(६१) उन पर धिक्कार बरसायी गयी, जहाँ भी मिल जायें पकड़े जायें तथा ख़ूब टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।[1]

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝٦٢

(६२) उनसे पूर्व के लोगों में भी अल्लाह का यही नियम लागू रहा। तथा तू अल्लाह के नियम में कभी भी परिवर्तन नहीं पायेगा।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝٦٣

(६३) लोग आप से क़ियामत के विषय में प्रश्न करते हैं। (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है, आपको क्या पता अति संभव है कि क़ियामत अत्यन्त निकट हो।

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝٦٤

(६४) अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों पर धिक्कार भेजी है तथा उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार कर रखी है।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝٦٥

(६५) जिसमें वे सदैव रहेंगे, वह कोई पक्षधर एवं सहायता करने वाला न पायेंगे।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ۝٦٦

(६६) उस दिन उनके मुख आग में उलटे-पलटे जायेंगे। (पश्चाताप तथा खेद से) कहेंगे कि काश हम अल्लाह (तआला) तथा रसूल की आज्ञा पालन करते।

---

[1]यह आदेश नहीं है कि उनको पकड़-पकड़ कर मार डाला जाये अपितु यह शाप है कि वे अपने भ्रष्ट आचरण तथा इन गतिविधियों से न रूके तो उनका अत्यन्त शिक्षाप्रद दुष्परिणाम होगा। कुछ कहते हैं कि यह आदेश है। परन्तु ये द्वयवादी आयत के अवतरित होने के पश्चात रूक गये थे, इसलिए उनके विरूद्ध यह कार्यवाही नहीं की गयी जिसका आदेश इस आयत में दिया गया था। (फ़तहुल क़दीर)

وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾

(६७) तथा वे कहेंगे, हे हमारे प्रभु ! हमने अपने प्रमुखों एवं बड़ों की मानी जिन्होंने हमें सत्य मार्ग से भटका दिया ।[1]

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾

(६८) हे हमारे प्रभु ! तू उन्हें दोगुना यातना दे तथा उन पर अत्यन्त बड़ा धिक्कार भेज ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

(६९) हे ईमानवालो ! उन लोगों जैसे न बन जाओ जिन्होंने मूसा को कष्ट दिया, तो जो बात उन्होंने कही थी अल्लाह ने उन्हें उससे मुक्त कर दिया,[2] तथा वह अल्लाह के समक्ष सम्मानित थे ।

---

[1]अर्थात हमने तेरे संदेष्टाओं तथा धर्म प्रचारकों के बजाय अपने उन बड़ों एवं पूर्वजों का अनुकरण किया, परन्तु आज हमें ज्ञात हुआ कि उन्होंने हमें तेरे संदेष्टाओं से दूर रखकर सीधे मार्ग से भटकाये रखा । पूर्वजों का अनुसरण एवं महानुभावों के अनुकरण आज भी लोगों में भटकावे का कारण है । काश, मुसलमान अल्लाह की आयतों पर विचार करके इन पगडंडियों से निकलें तथा क़ुरआन व हदीस के सीधे मार्ग को अपना लें कि मोक्ष केवल अल्लाह तथा अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण में ही है न कि धर्मगुरूओं तथा बड़ों के अनुसरण में अथवा पूर्वजों की प्राचीन रीति-रिवाजों को अपनाने में ।

[2]इसकी व्याख्या हदीस में इस प्रकार आयी है कि आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम अति लज्जाशील थे, अत: अपना शरीर कभी उन्होंने किसी के समक्ष नग्न नहीं किया । इस्राईली वंश के लोग कहने लगे कि शायद मूसा के शरीर पर सफेद दाग़ अथवा अन्य इसी प्रकार का रोग है, इसलिए हर समय वस्त्र पहनकर ढका-छिपा रहता है । एक बार एकान्त में आदरणीय मूसा स्नान करने लगे, कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिये । पत्थर (अल्लाह के आदेश से) वस्त्र लेकर भाग खड़ा हुआ । आदरणीय मूसा उसके पीछे-पीछे दौड़े यहाँ तक कि इस्राईलियों की एक सभा में पहुँच गये उन्होंने आदरणीय मूसा को नग्नवस्था में देखा तो उनके समस्त संदेह दूर हो गये । मूसा अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक तथा हर प्रकार के दाग़ से शुद्ध थे । इस प्रकार अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से पत्थर के द्वारा उनके इस आक्षेप एवं शंका को दूर कर दिया जो इस्राईल की सन्तान की ओर से उन पर लगाया जाता था । (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया) आदरणीय मूसा के द्वारा ईमानवालों को समझाया जा रहा है कि तुम हमारे अन्तिम संदेष्टा परम आदरणीय

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَقُولُوا۟ قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٧٠﴾

(७०) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो तथा सीधी-सीधी (सत्य) बातें किया करो ।[1]

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧١﴾

(७१) ताकि अल्लाह (तआला) तुम्हारे कार्य सुधार दे तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर दे,[2] तथा जो भी अल्लाह तथा उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली ।

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا

(७२) हमने अपनी अमानत को आकाशों पर तथा धरती पर एवं पर्वतों पर प्रस्तुत किया (परन्तु) सभी ने उसके उठाने से इंकार कर दिया तथा उससे डर गये, (परन्तु) मनुष्य ने

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्राईलियों की भाँति कष्ट मत पहुँचाओ तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में ऐसी बात न करो जिसे सुनकर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पीड़ा एवं दुख का संवदेन करें, जैसे एक अवसर पर युद्ध में प्राप्त परिहार के विभाजन के समय एक व्यक्ति ने कहा था कि इसमें न्याय से काम नहीं लिया गया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक ये शब्द पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्रोध आया, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुख लाल हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मूसा पर अल्लाह की दया हो, उन्हें इससे कहीं अधिक पीड़ा पहुँचायी गयी परन्तु उन्होंने धैर्य रखा।" (बुख़ारी कितावुल अम्बिया, मुस्लिम किताबुज़्ज़कात बाबु ऐताईल मुअल्लाफति क़ुलूबोहुम अलल् इस्लाम)

[1]अर्थात ऐसी बात जिसमें त्रुटि एवं टेढ़ापन हो न धोखा हो, बल्कि सत्य हो। سَدِيدٌ शब्द تَسْدِيدُ السَّهْم से है, अर्थात जिस प्रकार तीर को सीधा किया जाता है ताकि सही निशाने पर लगे, उसी प्रकार तुम्हारे मुख से निकली हुई बात तथा तुम्हारा व्यवहार एवं आचरण सीधे मार्ग पर आधारित हो, सत्य एवं सत्यता से तनिक भी विचलित न हो।

[2]यह अल्लाह से भय तथा सत्य वचन का परिणाम है कि तुम्हारे कर्मों में सुधार होगा तथा अन्य पुण्यकर्मों से सुशोभित किये जाओगे तथा कुछ कमी अथवा आलस्यता रह जायेगा तो उसे अल्लाह तआला क्षमा कर देगा।

وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

उसे उठा लिया,[1] वह अत्यन्त अत्याचारी मूर्ख है ।[2]

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٣﴾

(७३) (यह इसीलिए) कि अल्लाह (तआला) मिथ्याचारी पुरूषों एवं मिथ्याचारी महिलाओं तथा मूर्तिपूजक पुरूषों एवं मूर्तिपूजक महिलाओं को दण्ड दे तथा ईमान वाले पुरूष एवं ईमानवाली महिलाओं की क्षमा-याचना स्वीकार कर ले,[3]

---

[1]जब अल्लाह तआला ने आज्ञाकारियों के प्रतिफल एवं प्रत्युपकार तथा अवज्ञाकारियों के लिए दण्ड एवं यातना का वर्णन कर दिया तो अब धार्मिक आदेश तथा उसकी कठिनाई की चर्चा कर रहा है । अमानत से वह धार्मिक नियम तथा अनिवार्य तथा आवश्यक कर्म तात्पर्य हैं जिनके करने पर पुण्य तथा न करने और विमुखता पर यातना होगी । जब यह धार्मिक भार आकाश तथा धरती एवं पर्वतों पर डाले गये तो वे उन्हें उठाने से भयभीत हो गये, परन्तु जब मनुष्य के समक्ष प्रस्तुत की गयी तो वह अल्लाह के आज्ञापालन (अमानत) के बदले एवं प्रतिफल तथा महत्व को देखकर इस भार को उठाने के लिए तैयार हो गया । धर्म विधान को अमानत कह कर इस ओर संकेत किया गया कि उनकी अदायगी इन्सानों पर उसी प्रकार अनिवार्य है जिस प्रकार अमानत की अदायेगी अनिवार्य होती है । प्रस्तुत करने का अर्थ क्या है ? तथा आकाश, धरती एवं पर्वतों ने इसका उत्तर किस प्रकार दिया तथा मनुष्य ने उसे किस समय स्वीकार किया ? इसका पूर्ण वृतान्त न हम जान सकते हैं न हम उसे वर्णन कर सकते हैं । हमें यह पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि अल्लाह ने अपनी प्रत्येक सृष्टि में एक विशेष प्रकार का संवेदन एवं प्रबोध रखा है यद्यपि हम इस वास्तविकता से परिचित नहीं हैं परन्तु अल्लाह तआला तो उसको समझने का सामर्थ्य रखता है । उसने अवश्य इस अमानत को उनके समक्ष प्रस्तुत किया होगा जिसे स्वीकार करने से उन्होंने इंकार कर दिया । यह इंकार उन्होंने उद्दण्डता तथा विद्रोह के विचार से नहीं किया अपितु उसमें यह भय संचित था कि यदि इस अमानत की माँगों को पूरे न कर सके तो हमें कठोर दंड भोगना पड़ेगा । मनुष्य चूँकि उतावला है, उसने यातना एवं दण्ड के पक्ष पर अधिक विचार नहीं किया तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने की अभिलाषा में इस दायित्व को स्वीकार कर लिया ।

[2]अर्थात इस भार को उठाकर उसने अपने ऊपर अत्याचार का कार्य तथा उसकी माँगों से विमुखता अथवा उसके मूल्य एवं सम्मान से बे परवाई करके अज्ञानता का प्रदर्शन किया ।

[3]इसका सम्बन्ध حَمَلَهَا से है अर्थात मनुष्य को इस अमानत का ज़िम्मेदार बनाने का उद्देश्य यह है कि द्वयवादियों तथा मूर्तिपूजकों का द्वयवाद एवं मिश्रणवाद तथा ईमानवालों

तथा अल्लाह तआला अत्यन्त क्षमाशील एवं दयालु है।

सूरतु सबा-३४

سُورَةُ سَبَإٍ

सूरः सबा मक्का में अवतरित हुई इसमें चौवन आयतें एवं छः रूकूअ हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي لَهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَهُ ٱلۡحَمۡدُ فِي ٱلۡأٓخِرَةِۚ وَهُوَ ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡخَبِيرُ ①

(१) समस्त प्रशंसायें अल्लाह ही के लिए योग्य हैं जिसके (स्वामित्व में) वह सब कुछ है जो आकाशों तथा धरती में है [1] तथा आख़िरत में भी प्रशंसा उसी के लिये है, [2] वह (अत्यन्त) हिक्मत वाला एवं (पूर्ण) सूचना रखने वाला है।

يَعۡلَمُ مَا يَلِجُ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا يَخۡرُجُ مِنۡهَا وَمَا يَنزِلُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا

(२) जो धरती में जाये[3] तथा जो उससे निकले, जो आकाश से उतरे[4] तथा जो चढ़कर उसमें

का ईमान प्रत्यक्ष हो जाये तथा फिर उसके अनुसार उन्हें प्रत्युपकार एवं दण्ड प्रदान किया जाये।

[1]अर्थात उसी के स्वामित्व एवं अधिकार में हैं, उसी की इच्छा तथा निर्णय उसमें लागू होता है। इन्सान को जो भी वरदान प्राप्त होता है उसी की रचना एवं उसी का उपकार है। इसीलिये आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु की प्रशंसा वास्तव में उन उपकारों पर अल्लाह ही की प्रशंसा है जिनसे उसने अपनी सृष्टि को सम्मानित किया है।

[2]यह प्रशंसा प्रलय के दिन ईमानवाले करेंगे, जैसे ﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي هَدَىٰنَا لِهَٰذَا﴾ (अल-आराफ़-४३) ﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِيٓ أَذۡهَبَ عَنَّا ٱلۡحَزَنَ﴾ (फ़ातिर-३४) ﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي صَدَقَنَا وَعۡدَهُۥ﴾ अज-ज़ुमर-७४) इत्यादि आयतें। फिर भी संसार में अल्लाह की स्तुति एवं प्रशंसा इबादत (वंदना) है जिसका उत्तरदायी मानव को बनाया गया है, तथा आख़िरत (परलोक) में यह ईमानवालों का आत्मिक आहार होगा, जिससे उन्हें स्वाद एवं स्फुर्ति का आभास हुआ करेगा, (फ़तहुल क़दीर)

[3]जैसे वर्षा, कोष, निधि आदि।

[4]वर्षा, ओले, गरज, विद्युत तथा ईश्वरीय विभूतियाँ आदि, अपितु फ़रिश्तों एवं आकाशीय ग्रन्थों का अवतरण।

يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾

जाये[1] वह सबसे सूचित है। तथा वह दयालु अत्यन्त क्षमा करने वाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٣﴾

(३) तथा काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़यामत व्याप्त नहीं होगी। आप कह दीजिए कि मुझे मेरे प्रभु की सौगन्ध जो परोक्ष का जानने वाला है कि वह निःसंदेह तुम पर व्याप्त होगी,[2] अल्लाह (तआला) से एक कण के समान की वस्तु भी गुप्त नहीं[3] न आकाशों में तथा न धरती में बल्कि उससे भी छोटी तथा बड़ी सभी वस्तु खुली किताब में अंकित है।[4]

لِّيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾

(४) ताकि वह ईमानवालों तथा सत्कर्मियों को अच्छा प्रतिकार प्रदान करे,[5] यही लोग हैं जिनके लिए मोक्ष तथा सम्मानित जीविका है।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ

(५) तथा हमारी आयतों को नीचा दिखाने में जिन्होंने प्रयत्न किये हैं[6] ये वे लोग हैं जिनके

---

[1]फ़रिश्तों तथा भक्तों का कर्म।

[2]शपथ भी ली तथा शब्द भी बल का और इस के अतिरिक्त बल का लाम अक्षर, अर्थात क़यामत क्यूँ नहीं आयेगी ? वह तो किसी भी रूप में आनी है।

[3]अनुपस्थित एवं गुप्त तथा दूर नहीं अर्थात जब आकाश तथा धरती का कोई कण उससे अनुपस्थित तथा छिपी नहीं तो फिर विभिन्न अंशों को जो धूल में मिल गये होंगे, एकत्र करके पुनः तुम्हें जीवित कर देना क्यों असम्भव होगा ?

[4]अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में विद्यमान एवं अंकित है।

[5]यह प्रलय होने का कारण है। अर्थात क़यामत इसलिए व्यापत होगी तथा सभी इन्सानों को अल्लाह इसलिये पुनः जीवित करेगा कि उनके पुण्यों का प्रतिफल प्रदान करे, क्योंकि प्रतिकार ही के लिए उसने यह दिन रखा है यदि यह प्रतिकार दिवस न हो तो फिर इसका अर्थ यह होगा कि सत्कर्मी तथा पापी समान हैं, और यह बात न्याय के अत्यन्त विपरीत है और भक्तों विशेष रूप से पुनीतों पर अत्याचार होगा। وما ربك بظلام للعبيد

[6]अर्थात हमारी आयतों का खंडन किया तथा मिथ्या कहा जो हमने अपने संदेष्टाओं पर अवतरित कीं। مُعجِزين यह समझते हुए कि हम उसे पकड़ने से विवश होंगे, क्योंकि

लिए अत्यन्त बुरे प्रकार की कठोर यातना है।	لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ۝٥
(६) तथा जिन्हें ज्ञान है वे देख लेंगे कि जो कुछ आप की ओर आपके प्रभु की ओर से अवतरित हुआ है वह (साक्षात) सत्य है,[1] तथा अल्लाह प्रभावशाली प्रशंसा वाले के मार्ग का मार्गदर्शन करता है।[2]	وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝٦
(७) तथा काफ़िरों ने कहा,[3] आओ, हम तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति बतायें[4] जो तुम्हें यह सूचनायें पहुँचा रहा है[5] कि जब तुम पूर्णरूप से कण-कण हो जाओगे तो तुम फिर से एक नये जीवन में आओगे।[6]	وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝٧

उनका विश्वास था कि मरने के पश्चात जब हम मिट्टी में मिल जायेंगे तो हम किस प्रकार पुन: जीवित होकर किसी के सामने अपने किये धरे के उत्तरदायी होंगे? उनका यह विचार मानों इस बात की घोषणा थी कि अल्लाह हमें पकड़ने पर सामर्थ्यवान ही नहीं होगा, इसलिए प्रलय का भय हमें क्यों हो?

[1]यहाँ देखने से तात्पर्य दिल से देखना अर्थात निश्चित ज्ञान है, मात्र आँख से देखना नहीं ज्ञानियों से तात्पर्य सहाबा (नबी के सहचर) अथवा दूसरे ग्रन्थ वाले ईमानदार अथवा सभी मुसलमान हैं, अर्थात ईमानवाले इस बात को जानते एवं इस पर विश्वास करते हैं।

[2]यह "हक़" (सत्य) का संयोजक है, अर्थात वह यह भी जानते हैं कि यह पवित्र क़ुरआन उस मार्ग की ओर मार्ग दर्शाता है जो उस अल्लाह का मार्ग है जो विश्व में सब पर प्रभावशाली तथा अपनी सृष्टि में प्रशंसनीय है तथा वह मार्ग क्या है? एकेश्वरवाद (अद्वैत) का मार्ग जिसकी ओर सभी ईशदूत अपने अपने समुदाय को बुलाते रहे।

[3]यह ईमानवालों के प्रति आख़िरत (परलोक) के इंकार करने वालों का कथन है जो उन्होंने परस्पर एक-दूसरे से कहा।

[4]इससे तात्पर्य आदरणीय मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं जो उनकी ओर अल्लाह के नबी बनकर आये।

[5]अर्थात विचित्र सूचना दुर्बोध सूचना।

[6]अर्थात मरने के पश्चात जब तुम मिट्टी में मिलकर कण-कण हो जाओगे, तुम्हारा प्रत्यक्ष अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। तुम्हें समाधियों (क़ब्रों) से पुन: जीवित किया जायेगा

أَفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِۦ جِنَّةٌۢ ۗ بَلِ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْءَاخِرَةِ فِى ٱلْعَذَابِ وَٱلضَّلَٰلِ ٱلْبَعِيدِ ⑧

(८) (हम नहीं कहते) कि स्वयं उसने ही अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है अथवा उसे उन्माद हो गया है [1] बल्कि (वास्तविकता यह है) कि आख़िरत पर विश्वास न रखने वाले ही यातना में तथा दूर के भटकावे में हैं ।[2]

أَفَلَمْ يَرَوْا۟ إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۚ إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ ٱلْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ ۚ

(९) तो क्या वे अपने आगे-पीछे आकाश तथा धरती को देख नहीं रहे हैं ?[3] यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें अथवा उन पर आकाश के टुकड़े गिरा दें,[4] निश्चय

तथा पुन: वही रूप-रेखा तुम्हें प्रदान कर दी जायेगी जिसमें तुम पहले थे । यह वार्तालाप उन्होंने परस्पर उपहास में किया ।

[1]अर्थात दो बातों में से एक तो अवश्य है कि यह मिथ्यालाप कर रहा है तथा अल्लाह की ओर से प्रकाशना (वह्यी) एवं दूतत्व (रिसालत) का दावा, यह उसका अल्लाह पर मिथ्यारोपण है, अथवा इसकी मत मारी गई है तथा उन्माद में ऐसी बातें कर रहा है जो अनुचित हैं ।

[2]अल्लाह ने फ़रमाया, बात ऐसी नहीं जिस प्रकार यह सोच रहे हैं, अपितु तथ्य यह है कि समझ-बूझ एवं वास्तविकता के ज्ञान से यही लोग विवश हैं जिसके कारण यह परलोक पर विश्वास (ईमान) लाने के बजाये उसे नकार रहे हैं, जिसका परिणाम परलोक की स्थाई यातना है तथा यह आज ऐसी गुमराही में लिप्त हैं जो सत्य से अति दूर है ।

[3]अर्थात इस पर विचार नहीं करते ? अल्लाह उनको डाँटते फटकारते हुए कह रहा है कि आख़िरत का यह इंकार आकाश तथा धरती की रचना में चिन्तन न करने का परिणाम है, अन्यथा जो शक्ति आकाश जैसी वस्तु, जिसकी ऊँचाई तथा विस्तार अवर्णनीय है तथा धरती जैसी वस्तु जिसकी लम्बाई एवं चौड़ाई दुर्बोध है, पैदा कर सकता है उसके लिए अपनी ही रचित वस्तु की पुन: रचना तथा उसे पुन: उसी स्थिति में लाना जिसमें पहले थी, क्योंकर असम्भव है ?

[4]अर्थात यह आयत दो बातों पर आधारित है, एक अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य की चर्चा पर जिसका अभी वर्णन हुआ । दूसरी, कुफ़्फ़ार के लिए चेतावनी तथा धमकी पर कि जो अल्लाह आकाश एवं धरती की रचना पर इस प्रकार सामर्थ्यवान है कि उन पर तथा उनके बीच प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार एवं प्रभुत्व है, वह जब चाहे उन पर अपना प्रकोप भेजकर उनको नष्ट कर सकता है । धरती में धँसाकर भी जैसे क़ारून को धँसाया अथवा आकाश के खन्ड गिराकर, जैसे ऐका वालों को नाश कर दिया गया ।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿٩﴾

इसमें पूरा प्रमाण है प्रत्येक उस भक्त के लिए जो (दिल से) ध्यानमग्न हो।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा हमने दाऊद पर अपनी कृपा की,[1] हे पर्वतो, उसके साथ सरूचि महिमागान किया करो तथा पक्षियों को भी[2] (यही आदेश है) तथा हमने उसके लिए लोहा को कोमल कर दिया।[3]

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

(११) कि तू पूरी-पूरी कवचें बना[4] तथा जोड़ों में अनुमित रख[5] तथा तुम सब पुण्य के कार्य करो,[6] (विश्वास करो) मैं तुम्हारे कर्म देख रहा हूँ।

---

[1]अर्थात नबूअत के साथ राज्य एवं अन्य कई विशेष गुणों से सम्मानित किया।

[2]उनमें एक मधुर स्वर का वरदान था, जब वह अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते थे तो पत्थर के ठोस पर्वत भी तस्बीह पढ़ने (अल्लाह की पवित्रता गान) में लग जाते थे, उड़ते पक्षी रूक जाते तथा गान करने लग जाते أَوِّبِي (अव्वेबी) का अर्थ है पवित्रता गान दुहराओ, अर्थात हमने पर्वतों एवं पक्षियों को कहा, अत: यह भी दाऊद के साथ पवित्रता गान (तस्बीह) में लीन हो जाते وَالطَّيْرَ, का संयोजक يا جبالُ के स्थान पर है, क्योंकि جبالُ वास्तव में कर्म कारक 'अ' अक्षर की मात्रा के साथ लोप है मूल वाक्य इस प्रकार है ناديا الجبال والطير (हमने पर्वतों तथा पक्षियों को पुकारा) अथवा इसका संयोजक فضلاً है, तथा अर्थ यह होंगे कि हमने पक्षियों को उनके आधीन कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात लोहे को अग्नि में तपाये तथा हथौड़े से कूटे बिना उसे मोम, गूँधे हुए आटे, तथा गीली मिट्टी के समान जैसे चाहते मोड़ लेते, बट लेते तथा जो चाहते बना लेते।

[4] سابغات लुप्त विशेष्य का विशेषण है अर्थात पूरी लम्बी कवचें जो योद्धा के शरीर को उचित प्रकार से ढांक लें तथा उसे शत्रुओं के आघात से सुरक्षित रखें।

[5]ताकि छोटी बड़ी न हों, अथवा कड़ी अथवा नरम न हो, अर्थात कड़ियों को जोड़ने में कील इतने सूक्ष्म न हों कि जोड़ हिलते रहें तथा उनमें स्थिरता एवं दृढ़ता न आये और न इतने मोटे हों कि उसे तोड़ ही डालें अथवा कड़ी तंग हो जाये तथा उसे पहना न जा सके यह कवच बनाने के उद्योग के विषय में आदरणीय दाऊद को निर्देश दिये गये।

[6]अर्थात इन वरदानों के बदले में सत्कर्मों का प्रयोजन करो ताकि मेरी व्यवहारिक कृतज्ञता भी व्यक्त होती रहे। इससे विदित हुआ कि जिसको अल्लाह सांसारिक उपकारों

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ⑫

(१२) तथा हमने सुलैमान के लिए वायु को (वश में कर दिया) कि प्रात: का गंतव्य स्थान उसका एक महीने का होता था तथा संध्या का गंतव्य स्थान भी,[1] तथा हमने उनके लिए ताँबे का स्रोत प्रवाहित कर दिया,[2] तथा उसके प्रभु के आदेश से कुछ जिन्नात भी उसके अधीन उसके समक्ष कार्य करते थे, तथा उनमें से जो भी हमारे आदेशों की अवहेलना करे हम उसे भड़कती हुई अग्नि की यातना का स्वाद चखायेंगे ।[3]

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ

(१३) जो कुछ सुलैमान चाहते वह (जिन्नात) तैयार कर देते, जैसे दुर्ग, चित्र (स्मारक), तालाब के समान लगन (तगाड़) तथा चूल्हों पर स्थापित सुदृढ़ देंगे (बड़े पतीले) ।[4] हे

से सुशोभित करे उसे उसी अनुपात में उसकी कृतज्ञता भी व्यक्त करनी चाहिए तथा कृतज्ञता में मूल वस्तु यही है कि उपकार करने वाले को प्रसन्न रखने का भरपूर प्रयत्न किया जाये अर्थात उसका आज्ञा पालन किया जाये, तथा अवज्ञा से बचा जाये ।

[1]अर्थात आदरणीय सुलैमान राज्य के प्रमुखों एवं सेना सहित सिंहासन पर आसीन हो जाते और जिधर आपका आदेश होता वायु उसे इतनी तीव्र गति से ले जाती कि एक महीने की दूरी प्रात: से दोपहर तक तथा इसी प्रकार एक महीने की दूरी दोपहर से रात तक पूरी कर ली जाती । इस प्रकार एक दिन में दो महीनों की यात्रा पूरी हो जाती ।

[2]अर्थात हमने जैसे दाऊद के लिए लोहा नर्म कर दिया था आदरणीय सुलैमान के लिए ताँबे का स्रोत प्रवाहित कर दिया ताकि ताँबे की धातु से जो चाहें बनायें ।

[3]अधिकतर भाष्यकारों के विचार से यह यातना प्रलय के दिन दी जायेगी परन्तु कुछ के समीप यह सांसारिक दण्ड है । वह कहते हैं कि अल्लाह ने एक फ़रिश्ता नियुक्त कर दिया था जिसके हाथ में अग्नि का सोंटा होता था । जो जिन्न आदरणीय सुलैमान की आदेश से विमुखता करता फ़रिश्ता वह सोंटा उसे मारता जिससे वह जलकर भस्म हो जाता ।

[4] مَحَارِيْب बहुवचन है مِحْرَاب का, उच्च स्थान अथवा सुन्दर भवन । अभिप्राय यह है उच्च भवन, भव्य गृह अथवा मस्जिदें तथा पूजा गृह تماثيل बहुवचन है تِمثال का, अर्थात चित्र यह चित्र निर्जीव वस्तुओं के होते थे । कुछ कहते हैं कि सन्देष्टाओं एवं धर्मात्माओं

وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾

दाऊद की सन्तान ! उसकी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए सत्कर्म करो, मेरे भक्तों में से कृतज्ञ भक्त कम ही होते हैं।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

(१४) फिर जब हमने उन पर मरण का आदेश भेज दिया तो उनकी सूचना (जिन्नात को) किसी ने न दी सिवाय घुन के कीड़े के जो उनकी लकड़ी को खा रहा था। तो जब (सुलैमान) गिर पड़े उस समय जिन्नों ने जान लिया कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान के प्रकोप में न फंसे रहते।[1]

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ

(१५) सबा के समुदाय के लिए अपनी बस्तियों में (अल्लाह के सामर्थ्य की) निशानी थी,[2]

के चित्र मस्जिदों में बनाये जाते थे ताकि उन्हें देखकर लोग भी इबादत (वंदना) करें। यह अर्थ उस स्थिति में सही है जब माना जाये कि आदरणीय सुलैमान के धर्मविधान में चित्रकारी की अनुमति थी, जो सही नहीं। फिर भी इस्लाम में तो अति कड़ाई के साथ इसको निषेध किया गया है। جفانٌ बहुवचन है جَفْنَة का अर्थात लगन جَواب बहुवचन है جابِيَةٌ का, जलाशय, जिसमें जल एकत्र किया जाता है, अर्थात जलाशय जितने बड़े-बड़े लगन, قُدورٌ देगें, راسِيَاتٌ स्थित। कहा जाता है कि यह देगें पर्वत काट कर बनाई जाती थीं जिन्हें इधर-उधर नहीं ले जाया जा सकता था। इसमें एक समय में हजारों व्यक्तियों का खाना पक जाता था। यह सभी कार्य जिन्नात करते थे।

[1]आदरणीय सुलैमान के युग में जिन्नात के संदर्भ में यह प्रसिद्ध हो गया था कि यह परोक्ष की बातें जानते हैं। अल्लाह ने माननीय सुलैमान के निधन द्वारा इस भ्रम की त्रुटि को प्रकट कर दिया।

[2]सबा वही समुदाय है जिस सबा की रानी विख्यात है, जो माननीय सुलैमान के युग में मुसलमान हो गई थी। समुदाय ही के नाम पर देश का नाम भी सबा था, इस समय यह क्षेत्र यमन के नाम से प्रसिद्ध है। यह बड़ा सम्पन्न देश था, यह देश थलीय तथा समुद्री व्यवसाय में भी प्रमुख था तथा कृषि एवं उद्यान में प्रसिद्ध। यह दोनों ही वस्तुयें किसी देश एवं समुदाय की सम्पन्नता का कारण होती हैं। इसी धन-सम्पत्ति के प्रचुरता को यहाँ अल्लाह के सामर्थ्य का लक्षण कहा गया है।

جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬ۥ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾

उनके दायें-बायें दो बाग़ थे ।[1] (हमने उनको आदेश दिया था कि) अपने प्रभु की प्रदान की हुई जीविका को खाओ[2] तथा उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो[3] यह स्वच्छ नगर[4] तथा क्षमा करने वाला प्रभु है ।[5]

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿۱۶﴾

(१६) परन्तु उन्होंने मुख फेरा तो हमने उन पर तीव्र बाढ़ का (पानी) भेज दिया तथा उनके (हरे-भरे) बाग़ों के बदले दो (ऐसे) बाग़ दिये जो स्वाद में कड़वे-कसेले तथा अधिकतर झाऊ एवं कुछ बेरी के वृक्षों वाले थे ।[6]

---

[1]कहते हैं कि नगर के दोनों ओर पर्वत थे जिनसे स्रोतों का जल प्रवाहित होकर नगर में आता था। उनके शासकों ने पर्वतों के बीच पुश्ते बनवाये तथा उनके साथ उद्यान लगा दिये गये जिससे जल की दिशा भी निर्धारित हो गई तथा बाग़ों की सिंचाई का एक प्राकृतिक साधन सुलभ हो गया। इन्हीं बाग़ों को दायें, बायें दो बाग़ कहा गया है। कुछ का विचार है कि جَنَّتَيْن से दो बाग़ नहीं अपितु दायें बायें की दो दिशायें अभिप्राय हैं तथा अभिप्राय बाग़ों की अधिकता है कि जिधर आँख उठाकर देखें बाग़, हरियाली एवं ताज़गी ही दिखाई पड़ती थी। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह उनके पैग़म्बरों (संदेष्टाओं) द्वारा कहलवाया गया अथवा अभिप्राय उन उपहारों का वर्णन है जिनसे उन्हें सम्मानित किया गया था।

[3]परोपकारी तथा दयावान का आज्ञापालन करो तथा उसकी अवज्ञा से बचो।

[4]अर्थात बाग़ों की अधिकता एवं फलों की प्रचुरता के कारण यह नगर उत्तम है। कहते हैं कि वातावरण की स्वच्छता के कारण यह नगर मक्खी, मच्छर एवं इस प्रकार के दुखदायी जन्तुओं से भी पवित्र था। والله أعلم

[5]अर्थात यदि तुम पालनहार की कृतज्ञता व्यक्त करते रहोगे तो वह तुम्हारे पाप भी क्षमा कर देगा। इसका भावार्थ यह हुआ कि यदि मनुष्य क्षमा-याचना करते रहें तो फिर पाप सर्वविनाश तथा पुरस्कारों के छिन जाने का कारण भी नहीं बनते अपितु अल्लाह क्षमा से काम लेता है।

[6]अर्थात उन्होंने पर्वतों के बीच पुश्ते तथा बाँध निर्माण करके पानी को जो रोका था और उसे कृषि तथा उद्यान के काम में लाते थे, हमने तीव्र जल पलावन के द्वारा उन

(१७) हमने उनकी कृतघ्नता का यह बदला उन्हें दिया, हम (ऐसे कड़े) दण्ड बड़े-बड़े कृतघ्नों को ही देते हैं ।

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝١٧

(१८) तथा हमने उनके तथा उन बस्तियों के मध्य जिनमें हमने विभूति (सुख-सुविधा) प्रदान कर रखी थी कुछ बस्तियाँ अन्य रखी थीं जो मार्ग पर दिखायी देती थीं[1] तथा उनमें चलने के स्थान निर्धारित कर दिये थे, [2] उनमें रातों तथा दिनों में शान्ति-सुरक्षा से चलते-फिरते रहो ।[3]

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝١٨

बाँधों तथा पुश्तों को तोड़ डाला तथा हरे एवं फलदार बागों को ऐसे बागों में बदल दिया जिनमें मात्र प्राकृतिक झाड़-झंकार होते हैं, जिनमें प्रथम तो कोई फल लगता ही नहीं और किसी में लगता भी है तो अति कड़वा, कसैला, कटुस्वाद जिन्हें कोई खा ही नहीं सकता । हाँ, कुछ बैरी के वृक्ष थे, जिनमें भी काँटे अधिक तथा बैर कम थे । عَرِمٌ बहुवचन है عَرِمَةٌ का, पुश्ता अथवा बाँध अर्थात इतना तीव्र पानी भेजा जिसने बाँध में दराड़ डाल दिया और पानी नगर में भी आ गया जिससे उनके घर जलमग्न हो गये तथा बाग़ों को भी उजाड़कर नाश कर दिया । यह बाँध "*सद्दे मआरिब*" के नाम से प्रसिद्ध है ।

[1]विभूतियों वाली बस्तियों से तात्पर्य शाम (सीरिया) की बस्तियाँ हैं । अर्थात हमने सबा देश (यमन) तथा शाम के मध्य सड़क के किनारे बस्तियाँ आबाद की थीं । कुछ ने ظاهِرة के अर्थ مُتواصِلة परस्पर मिली एवं निरन्तर किये हैं । भाष्यकारों ने इन बस्तियों की संख्या ४ हज़ार ७ सौ बतलायी है । यह उनका व्यवसायिक मार्ग था जो निरन्तर आबाद था, जिसके कारण एक तो उनके खान-पान तथा विश्राम के लिये मार्ग-व्यय साथ लेने की आवश्यकता न थी । दूसरे, निर्जन होने के कारण जो लूट-मार तथा हत्या का भय होता है, वह नहीं होता था ।

[2]अर्थात एक आबादी से दूसरी आबादी की दूरी निश्चित एवं ज्ञात थी और उसके हिसाब से वह सरलता से अपनी यात्रा पूरी कर लेते थे । जैसे प्रात: यात्रा आरम्भ करते तो दोपहर तक किसी आबादी एवं गाँव में पहुँच जाते, वहाँ खा पीकर विश्राम करते तथा फिर यात्रा आरम्भ कर देते तो रात को किसी आबादी में जा पहुँचते ।

[3]यह प्रत्येक भय से सुरक्षित तथा मार्ग-व्यय के भार से निश्चित होने का वर्णन है कि रात-दिन की जिस घड़ी में तुम यात्रा करना चाहो करो, न जान एवं धन का भय, न मार्ग-व्यय साथ लेने की आवश्यकता ।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑲

(१९) परन्तु उन्होंने पुन: प्रार्थना की कि हे हमारे प्रभु ! हमारी यात्रायें दूर तक कर दे,[1] और चूँकि स्वयं उन्होंने अपने हाथों अपना बुरा किया इसलिए हमने उन्हें (प्राचीन) कथाओं के रूप में कर दिया[2] तथा उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये,[3] नि:सन्देह प्रत्येक धैर्य एवं कृतज्ञता व्यक्त करने वाले के लिए इस (घटना) में बहुत सी शिक्षायें हैं।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑳

(२०) तथा शैतान ने उनके विषय में अपना विचार (अनुमान) सत्य कर दिखाया, ये लोग (सब के सब) उसके अनुयायी बन गये अतिरिक्त ईमानवालों के एक गुट के।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ

(२१) तथा शैतान का उन पर कोई दबाव (एवं बल) न था परन्तु इसलिए कि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों में (उत्तम प्रकार से) प्रकट कर दें

---

[1]अर्थात जिस प्रकार लोग यात्रा की तकलीफों एवं जोखिम तथा ऋतु की उग्रता की चर्चा करते हैं हमारी यात्रा भी उसी प्रकार दूर-दूर कर दे, निरन्तर आबादियों की जगह मध्य से सुनसान निर्जन वनों तथा जंगलों से हमें गुज़रना पड़े, गर्मियों में धूप की तीव्रता तथा सर्दियों में बर्फीली वायु हमें व्याकुल करें तथा मौसम की उग्रता से बचने के लिए हमें मार्ग-व्यय की भी व्यवस्था करनी पड़े। उनकी यह प्रार्थना उसी प्रकार की है जैसे इस्राईलियों ने 'मन्न' तथा 'सलवा' एवं अन्य सुविधाओं के विपरीत दालों, तरकारियों आदि की माँग की थी अथवा पुन: उनकी स्थिति से विदित हो रहा था कि उनकी यह प्रार्थना है।

[2]अर्थात इनको इस तरह उन्मूल किया कि इनकी विनाश की कथा हर ज़ुबान पर हो गयी और बैठकों एवं सभाओं में चर्चा का विषय बन गया।

[3]अर्थात उन्हें विभाजित एवं छिन्न-भिन्न कर दिया, जैसाकि सबा की प्रसिद्ध जातियाँ विभिन्न स्थानों पर जा आबाद हुईं, कोई यसरिब तथा मक्का आ गया कोई सीरिया के क्षेत्रों में चला गया, कोई कहीं, कोई कहीं।

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾

जो उससे शंका में हैं। तथा आपका प्रभु प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

(२२) कह दीजिए कि अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है (सबको) पुकार लो,[1] न उनमें से किसी को आकाशों तथा धरती में से एक कण का अधिकार है,[2] न उनका उनमें कोई भाग है[3] तथा न उनमें से कोई अल्लाह का सहयोगी है।[4]

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن

(२३) तथा सिफ़ारिश (की प्रार्थना) भी उसके समक्ष कोई लाभ नहीं देती सिवाय उनके जिनके लिए आज्ञा हो जाये।[5] यहाँ तक कि

---

[1]अर्थात पूज्य होने का, यहाँ زعمتم के दो कर्म लुप्त हैं, زعمتموهم آلهة अर्थात जिन जिनको तुम पूज्य समझ रहे हो।

[2]अर्थात न उन्हें भलाई पर कोई अधिकार है न बुराई पर, किसी को लाभ पहुँचाने का सामर्थ्य है न क्षति से बचाने का, आकाश एवं धरती की चर्चा सामान्यता के लिए है, क्योंकि सभी वाहय वस्तुओं के लिये यही स्थान हैं।

[3]न उत्पत्ति में, न स्वामित्व में तथा न अधिकार में।

[4]जो किसी विषय में अल्लाह की सहायता करता हो, अपितु अल्लाह अन्य के साझे के बिना सभी अधिकारों का स्वामी है तथा किसी की सहायता बिना ही सभी काम करता है।

[5]'जिनको आज्ञा मिल जाये' का अभिप्राय है संदेष्टा तथा फ़रिश्ते आदि, अर्थात यही सिफ़ारिश करेंगे, कोई अन्य नहीं, इसलिए कि किसी और की सिफ़ारिश लाभप्रद न होगी न उन्हें अनुमति ही होगी। दूसरा अभिप्राय है, सिफ़ारिश के पात्र, अर्थात संदेष्टाओं, फ़रिश्तों तथा पुण्यात्माओं की सिफ़ारिश उन्हीं के लिए होंगी जो सिफ़ारिश के पात्र होंगे क्योंकि अल्लाह की ओर से उन्हीं को सिफ़ारिश करने की अनुमति होगी, किसी अन्य के लिए नहीं। (फ़तहुल क़दीर) अभिप्राय यह हुआ कि संदेष्टाओं, फ़रिश्तों तथा सदाचारियों के सिवाय कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकेगा, तथा यह भी ईमानवाले पापियों के लिए ही कर सकेंगे, अधर्मी (काफ़िर) मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) तथा अल्लाह के विद्रोहियों के लिए नहीं। पवित्र ईश्वाणी क़ुरआन ने इन दोनों बिन्दुओं का स्पष्टीकरण दूसरे स्थान पर

قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा ? उत्तर देते हैं कि सत्य कहा[1] तथा वह अत्यन्त सर्वोच्च एवं अत्यन्त महान है।

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

(२४) पूछिये कि तुम्हें आकाशों एवं धरती से जीविका कौन पहुँचाता है ? (स्वयं) उत्तर दीजिए कि अल्लाह (महान)। (सुनो), हम अथवा तुम या तो अवश्य संमार्ग पर हैं अथवा खुली पथभ्रष्टता में है।[2]

قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) कह दीजिए कि हमारे किये हुए पापों के विषय में तुमसे कुछ न पूछा जायेगा तथा न तुम्हारे कर्मों की पूछताछ हमसे होगी।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾

(२६) (उन्हें) सूचित कर दीजिए कि हम सबको हमारा प्रभु एकत्रित करके फिर हममें सत्य निर्णय कर देगा,[3] तथा वह निर्णय करने वाला सब कुछ जानने वाला है।

कर दिया है। ﴿مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾ (अल-बक़र:-२५५) ﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ﴾ (सूर: अम्बिया-२८)

[1]इसके अनेक भाष्य वर्णन किये गये हैं। इब्ने जरीर तथा इब्ने कसीर आदि ने अन्तिम ईशदूत के कथन के प्रकाश में इसकी यह व्याख्या की है कि जब अल्लाह किसी विषय के सम्बन्ध में वह्य (प्रकाशना) करता है तो आकाश पर उपस्थित फ़रिश्ते भय एवं डर से काँपने लगते हैं तथा उन पर बेहोशी की सी अवस्था आच्छादित हो जाती है। होश आने पर वह प्रश्न करते हैं तो अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते दूसरे फ़रिश्तों को, और वह नीचे वाले फ़रिश्तों को बतलाते हैं तथा इस प्रकार सूचना पहले आकाश के फ़रिश्तों तक पहुँच जाती है। (इब्ने कसीर)

[2]स्पष्ट बात है कि पथभ्रष्ट वही होगा जो ऐसी वस्तुओं को अराध्य समझता है जिनका आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाने में कोई भाग नहीं, न वह वर्षा कर सकते हैं न कुछ उगा सकते हैं। अतः सत्य पर वास्तव में एकेश्वरवादी ही हैं, न कि दोनों।

[3]अर्थात उसके हिसाब से फल देगा, अच्छों को स्वर्ग में और बुरों को नरक में प्रवेश करेगा।

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

(२७) कह दीजिए कि अच्छा मुझे भी उन्हें दिखा दो जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बनाकर उसके साथ सम्मिलित कर रहे हो, ऐसा कदापि नहीं,[1] बल्कि वही अल्लाह है प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा हमने आपको सभी लोगों के लिए शुभसूचनायें सुनाने वाला तथा सर्तक करने वाला बनाकर भेजा है। परन्तु (यह सत्य है कि) लोगों में अधिकतर अज्ञानी हैं।[2]

---

[1]अर्थात उसके समान कोई नहीं है, न उसका साथी है बल्कि वह हर वस्तु पर प्रभावशाली है और उसके हर बात और कार्य में हिकमत है।

[2]इस आयत में अल्लाह ने एक तो नबी (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सर्वसामान्य रिसालत का वर्णन किया है कि आप को पूरी मानव जाति का पथ-पदर्शक तथा निर्देशक बनाकर भेजा गया है, दूसरा यह वर्णन किया गया कि आपकी इच्छा एवं प्रयास के बावजूद भी अधिकतर लोग ईमान (आस्था) से वंचित रहेंगे। इन दोनों बातों की व्याख्या और भी अन्य स्थानों पर की है, जैसे आप की रिसालत के विषय में फ़रमाया: ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ (अल-आराफ़-१५८) ﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾ (अल-फ़ुरक़ान-१) अपने एक कथन में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : मुझे पाँच चीज़ें ऐसी दी गई हैं जो मुझसे पूर्व किसी नबी को नहीं दी गई, १- महीने की दूरी तक शत्रु के दिल में मेरी धाक बिठाकर मेरी सहायता की गई २- पूरा भूभाग मेरे लिए मस्जिद तथा पवित्र है, जहाँ भी नमाज़ का समय आ जाये मेरे अनुयायी नमाज़ पढ़े ३- लड़ाई में प्राप्त माल मेरे लिए वैध कर दिया गया जो मुझ से पहले किसी के लिए उचित नहीं था ४- मुझे सिफ़ारिश का अधिकार दिया गया, ५- पहले नबी मात्र अपने समुदाय के लिए भेजा जाता था, मुझे सृष्टि के सम्पूर्ण मानवजाति के लिए नबी बनाकर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी किताबुत्तयम्मुम, सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद) एक अन्य हदीस में फ़रमाया بعثت إلى الأحمر و الأسود (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद) أحمر و أسود (लाल, काले) से तात्पर्य कुछ ने जिन्न तथा इन्सान तथा कुछ ने अरबवासी एवं अन्य देशवासी लिये हैं। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ही अर्थ सही हैं, इसी प्रकार बहुसंख्यक की अज्ञानता तथा पथभ्रष्टता का स्पष्टीकरण किया। ﴿وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ﴾ (सूरः यूसुफ़-१०३) "आपकी आकांक्षा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान नहीं लायेंगे"

(२९) तथा पूछते हैं कि वह वादा है कब ? यदि सत्य हो तो बता दो ।[1]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

(३०) उत्तर दीजिए कि वादे का दिन ठीक निर्धारित है जिससे एक क्षण न तुम पीछे हट सकते हो न आगे बढ़ सकते हो ।[2]

قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾

(३१) तथा काफ़िरों ने कहा कि हम न तो इस क़ुरआन को मानें न इससे पूर्व की किताबों को,[3] तथा हे देखने वाले, काश कि तू इन अत्याचारियों को उस समय देखता जबकि ये अपने प्रभु के समक्ष खड़े हुए एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे होंगे,[4] नीची श्रेणी के लोग उच्च श्रेणी के लोगों से कहेंगे[5] कि यदि तुम न होते तो हम ईमान वाले होते ।[6]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

﴿وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ﴾ (अल-अनआम-११६) "यदि आप धरतीवासियों की बहुसंख्या के पीछे चलेंगे तो वह आपको पथभ्रष्ट कर देंगे," जिसका अभिप्राय यही हुआ कि अधिक संख्या पथभ्रष्टों की है ।

[1]यह उपहास स्वरूप पूछते थे, क्योंकि इसका होना उनके विचार में दूर एवं असंभव था ।

[2]अर्थात अल्लाह ने प्रलय का एक दिन निश्चित कर रखा है जिसका ज्ञान मात्र उसी को है । फिर भी जब वचन दिया गया समय आ जायेगा तो एक क्षण आगे पीछे नहीं होगा । ﴿إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ﴾ (नूह-४)

[3]जैसे धर्मग्रन्थ तौरात, ज़बूर तथा इंजील आदि । कुछ ने इससे तात्पर्य परलोक गृह लिया है । इसमें काफ़िरों के विरोध एवं उपद्रव का वर्णन है कि वह सभी युक्तियों के उपरान्त भी पवित्र क़ुरआन तथा परलोक के प्रति ईमान लाने से भाग रहे हैं ।

[4]अर्थात संसार में यह कुफ़्र तथा शिर्क में परस्पर साथी एवं इस नाते परस्पर प्रेमी थे, किन्तु परलोक में परस्पर शत्रु तथा एक-दूसरे को दोष देंगे ।

[5]अर्थात संसार में यह लोग जो बिना सोंचे समझे साधारण रीति पर चलते हैं अपने उन नेताओं से कहेंगे जिनके वे संसार में अनुगामी बने रहे ।

[6]अर्थात तुम्हीं ने हमें ईशदूतों तथा सत्य के प्रचारकों के अनुगमन से रोके रखा था यदि तुम ऐसा न करते तो हम निश्चय ईमान वाले होते ।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) ये उच्च लोग उन दुर्बल लोगों को उत्तर देंगे कि क्या तुम्हारे पास मार्गदर्शन आ चुकने के पश्चात हमने तुम्हें उससे रोका था। (नहीं) बल्कि तुम (स्वयं) अपराधी थे।[1]

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) (तथा इसके उत्तर में) यह दुर्बल लोग उन अहंकारियों से कहेंगे, (नहीं, नहीं) बल्कि दिन-रात छल-कपट से हमें अल्लाह के साथ कुफ़्र करने तथा उसके साथ साझीदार निर्धारित करने का तुम्हारा आदेश देना हमारी बेईमानी का कारण हुआ,[2] तथा यातना को देखते ही सब के सब दिल ही दिल में लज्जित हो रहे होंगे,[3] तथा काफ़िरों की गर्दनों में हम तौक़ डाल देंगे।[4] उन्हें केवल उनके किये हुए कर्मों का बदला दिया जायेगा।[5]

---

[1]अर्थात हमारे पास कौन-सा बल था कि हम तुम्हें सत्य मार्ग से रोकते, तुमने स्वयं उस पर ध्यान नहीं दिया तथा अपने मन के कारण उसे स्वीकार करने से भागते रहे तथा आज अपराधी हमें बना रहे हो, जबकि सब कुछ तुमने अपने मन ही से किया। अत: अपराधी तो तुम स्वयं हो न कि हम।

[2]अर्थात हम अपराधी तो उस समय होते जब अपने मन से पैग़म्बरों का इंकार करते, जबकि यथार्थ यह है कि तुम रात-दिन हमें पथभ्रष्ट करने तथा अल्लाह का इंकार करने तथा उसका साझी बनाने पर तैयार करते रहे जिससे अन्तत: हम तुम्हारे अनुयायी बनकर ईमान (आस्था) से वंचित रहे।

[3]अर्थात परस्पर दोषारोपण तो करेंगे किन्तु दिल में दोनों ही गुट अपने कुफ़्र (अविश्वास) पर पछतायेंगे परन्तु शत्रुओं के अशुभ के भय से व्यक्त नहीं करेंगे।

[4]अर्थात ऐसी जंजीरें जो उनके हाथों को उनकी गर्दनों के साथ बाँधेंगी।

[5]अर्थात दोनों को उनके कर्मों का दण्ड मिलेगा, प्रमुखों को उनके अनुसार तथा उनके अनुगामियों को उनके अनुसार, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ﴾ (अल-आराफ़-३८) अर्थात प्रत्येक को दुगुना दण्ड मिलेगा।

وَمَآ أَرْسَلْنَا فِى قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَآ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा हमने तो जिस बस्ती में जो भी सचेत करने वाला भेजा वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि जिस वस्तु के साथ तुम भेजे गये हो हम उसके साथ कुफ़्र करने वाले हैं ।[1]

وَقَالُوا۟ نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَٰلًا وَأَوْلَٰدًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा कहा कि हम धन तथा सन्तान में अधिक हैं, यह नहीं हो सकता कि हमें यातना दी जाये ।[2]

قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ

(३६) कह दीजिए कि मेरा प्रभु जिसके लिए चाहता है जीविका को विस्तृत कर देता है तथा तंग भी कर देता है,[3] परन्तु अधिकतर

---

[1]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि मक्का के धनवान तथा प्रमुख आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर विश्वास नहीं कर रहे हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुख पहुँचा रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है प्रत्येक युग के सम्पन्न लोगों ने पैग़म्बरों को नकारा ही है तथा प्रत्येक पैग़म्बर पर ईमान लाने वाले सर्वप्रथम समाज के दरिद्र एवं निर्धन वर्ग के लोग ही होते थे । जैसे आदरणीय नूह के समुदाय ने अपने संदेष्टा से कहा, ﴿أَنُؤْمِنُ لَكَ وَٱتَّبَعَكَ ٱلْأَرْذَلُونَ﴾ "क्या हम तुझ पर ईमान (विश्वास) लायें जबकि तेरे अनुयायी नीच लोग हैं ?" (*अल-शोअरा,१११*) दूसरे संदेष्टाओं से भी उनके समुदायों ने यही कहा, देखिये *सूरह आराफ़-७५ अल-अनआम-५३,१३३* तथा *सूरः बनी इस्राईल-१६* आदि । مُتْرَفُونَ का अर्थ है धनी तथा प्रमुख लोग ।

[2]अर्थात जब अल्लाह ने संसार ही में हमें धन, सन्तान के प्राचुर्य से सम्मानित किया है तो प्रलय भी यदि होगी तो हमें यातना नहीं होगी । मानो उन्होंने परलोक को भी संसार पर आंक लिया कि जिस प्रकार इस लोक में काफ़िर तथा ईमानवाले पर अल्लाह की दया हो रही है परलोक में भी इसी प्रकार होगी जबकि परलोक तो प्रतिकार गृह है । वहाँ तो इस लोक में किये गये कर्मों का बदला मिलना है, अच्छे कर्मों का अच्छा, बुरे कर्मों का बुरा, तथा संसार परीक्षा गृह है । यहाँ अल्लाह तआला प्रत्येक को परीक्षार्थ सांसारिक सुख-सुविधा प्रदान करता है । अथवा उन्होंने सांसारिक धन, साधन की प्रचुरता को अल्लाह की प्रसन्नता का लक्षण समझा जबकि ऐसा नहीं है । यदि ऐसा होता तो अल्लाह अपने आज्ञाकारी भक्तों को सबसे अधिक धन, संतान प्रदान करता ।

[3]इसमें काफ़िरों के भ्रम तथा शंका का निवारण किया जा रहा है कि जीविका का विस्तार तथा संकुचन अल्लाह की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का द्योतक नहीं, अपितु इस का सम्बन्ध अल्लाह की हिक्मत एवं इच्छा से है । इसलिए वह धन उसे भी देता है जिसे

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٦

लोग नहीं जानते।

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ۝٣٧

(३७) तथा तुम्हारे धन एवं सन्तान ऐसे नहीं कि तुम्हें हमारे पास (पदों से) निकट कर दें [1] परन्तु जो ईमान लायें तथा पुण्य के कर्म करें[2] तो उनके लिए उनके कर्मों का दुगुना बदला है[3] तथा वे निर्भय एवं निश्चिन्त होकर उच्च भवनों में रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝٣٨

(३८) तथा जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने की दौड़-धूप में लगे रहते हैं, यही हैं जो यातना में (पकड़कर) उपस्थित किये जायेंगे।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ

(३९) कह दीजिए कि मेरा प्रभु अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे जीविका विस्तृत करता है तथा जिसके लिए चाहे नाप (तंग) कर देता है, [4] तथा तुम जो कुछ भी अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे

पसन्द करता है तथा उसे भी जिसे नापसन्द करता है तथा जिसे चाहता है धनी करता है और जिसे चाहता है दरिद्र रखता है।

[1]अर्थात यह धन इस बात का प्रमाण नहीं कि हमें तुमसे प्रेम है और हमारे दरबार में तुम्हें विशेष स्थान प्राप्त है।

[2]अर्थात हमारा प्रेम तथा निकटता प्राप्त करने का साधन तो मात्र ईमान तथा सत्कर्म है, जैसे हदीस में फ़रमाया गया, "अल्लाह तुम्हारी रूप रेखा तथा तुम्हारे धन-सम्पत्ति नहीं देखता वह तो तुम्हारे दिलों एवं कर्मों को देखता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे, बाब तहरीमे जुल्मिल मुस्लिम)

[3]अपितु कई-कई गुना, एक पुण्य का बदला कम से कम दस पुण्य, अधिक सात सौ गुना तक अपितु उससे भी अधिक तक।

[4]अत: वह काफ़िर को भी ख़ूब धन देता है, किन्तु किसलिये ? ढील देने के लिए तथा कभी ईमानदार को निर्धन रखता है, किसलिये ? उसके पुण्य एवं प्रतिफल को बढ़ाने के लिए। इसलिए केवल धन की अधिकता उसकी प्रसन्नता का, तथा कमी उसकी अप्रसन्नता का प्रमाण नहीं हैं। यह पुनरावृत्ति मात्र बल देने के लिये है।

وَهُوَ خَيْرُ الرَّٰزِقِينَ ۝٣٩

अल्लाह उसका (पूरा-पूरा) बदला देगा[1] तथा वह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।[2]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ۝٤٠

(४०) तथा उन सब को अल्लाह उस दिन एकत्रित करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे।[3]

قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟

(४१) वे कहेंगे कि तू महिमावान है एवं हमारा संरक्षक तो तू है न कि ये।[4] ये लोग

---

[1] إخلاف का अर्थ है, प्रतिकार तथा बदला देना। यह प्रतिफल संसार में भी संभव है तथा आख़िरत (परलोक) में तो निश्चित है। हदीस कुदसी में आता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है, «أَنْفِقْ أُنْفِقْ عَلَيْكَ» "तू ख़र्च कर मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा (अर्थात बदला दूँगा)।" (सहीह बुख़ारी सूर: हूद) दो फ़रिश्ते प्रत्येक दिन घोषणा करते हैं, एक कहता है, «اللَّهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا» (हे अल्लाह, न ख़र्च करने वाले के धन को नाश कर दे)। दूसरा कहता है, «اللَّهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا» (हे अल्लाह, ख़र्च करने वालों को बदला प्रदान कर)। (अल-बुख़ारी, किताबुज़ ज़कात)

[2]क्योंकि एक व्यक्ति यदि किसी को कुछ देता है तो उसका यह देना अल्लाह की संमति तथा इच्छा एवं उसके भाग लेख से ही है। वास्तव में देने वाला उसकी जीविका प्रदान करने वाला नहीं है जिस प्रकार पिता बच्चों का अथवा राजा अपनी सेना का पोषक (संरक्षक) कहलाता है। जबकि राजा तथा प्रजा, बच्चे तथा बड़े सब को जीविका वास्तव में अल्लाह ही देता है जो सब का रचयिता है। अत: जो भी अल्लाह के दिये माल में से किसी को कुछ देता है तो वह ऐसे माल का प्रयोग करता है जो अल्लाह ही ने दिया है। तो वास्तव में अन्नदाता भी अल्लाह ही हुआ। तथापि यह उसकी विशेष दया एवं उपकार है कि उसके दिये माल में से उसकी प्रसन्नता के अनुसार व्यय (ख़र्च) करने पर वह पुण्य एवं प्रतिफल भी प्रदान करता है।

[3]यह बहुदेववादियों को अपमानित करने के लिए अल्लाह फ़रिश्तों से प्रश्न करेगा, जैसे ईशदूत ईसा के विषय में आता है कि अल्लाह उनसे भी प्रश्न करेगा, "क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे तथा मेरी माँ (मरियम) को अल्लाह के सिवाय अराध्य बना लेना ?" (अल-मायदा-११६) आदरणीय ईसा उत्तर देंगे, हे अल्लाह तू पवित्र है, जिसका मुझे अधिकार नहीं था वह बात मैं क्योंकर कह सकता था ? जैसे कि सूर: अल-फ़ुरक़ान-१७ में भी वर्णन हुआ, कि क्या यह तुम्हारे कहने पर तुम्हारी वंदना करते थे ?

[4]अर्थात फ़रिश्ते भी आदरणीय ईसा की भांति अल्लाह तआला की पवित्रता का वर्णन

يَعۡبُدُونَ ٱلۡجِنَّۖ أَكۡثَرُهُم بِهِم مُّؤۡمِنُونَ ﴿٤١﴾

जिन्नों की इबादत करते थे,[1] इनमें से अधिकतर को उन्हीं पर ईमान था।

فَٱلۡيَوۡمَ لَا يَمۡلِكُ بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٖ نَّفۡعٗا وَلَا ضَرّٗا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُواْ ذُوقُواْ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तो आज तुममें से कोई (भी) किसी के लिए (भी किसी प्रकार के) लाभ-हानि का स्वामी न होगा।[2] तथा हम अत्याचारियों[3] से कह देंगे कि उस अग्नि की यातना चखो जिसे तुम झुठलाते रहे।

وَإِذَا تُتۡلَىٰ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٖ قَالُواْ مَا هَٰذَآ إِلَّا رَجُلٞ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمۡ عَمَّا كَانَ يَعۡبُدُ ءَابَآؤُكُمۡ وَقَالُواْ

(४३) तथा जब उनके समक्ष हमारी साफ़-साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह ऐसा व्यक्ति[4] है जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के देवताओं से रोक देना चाहता है (इसके

करके अपनी निर्दोषता प्रकट करेंगे तथा कहेंगे कि हम तो तेरे दास हैं और तू हमारा स्वामी है, हमारा इनसे क्या सम्बन्ध ?

[1]जिन्न से तात्पर्य शैतान हैं, अर्थात यह वस्तुतः शैतानों के पुजारी हैं क्योंकि वही उनको मूर्तिपूजा पर लगाते तथा उन्हें पथभ्रष्ट करते थे, जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿إِن يَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦٓ إِلَّآ إِنَٰثٗا وَإِن يَدۡعُونَ إِلَّا شَيۡطَٰنٗا مَّرِيدٗا﴾

"अर्थात 'ये तो अल्लाह को छोड़कर केवल स्त्रियों को पुकारते हैं, तथा वास्तव में ये मात्र दुष्ट शैतान को पूजते हैं।" (अन्-निसा-११७)

[2]अर्थात संसार में तुम इस भ्रम में उनकी इबादत करते थे कि यह तुम्हें लाभ पहुँचायेंगे, तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे तथा अल्लाह के दण्ड से तुम्हें मुक्ति दिलवायेंगे, जैसे आज भी पीरों के तथा समाधियों (क़ब्रों) के पुजारियों की दशा है, किन्तु देख लो कि आज यह किसी बात पर समर्थ नहीं हैं।

[3]अत्याचारियों से अभिप्राय अल्लाह के सिवाय अन्य के पुजारी हैं, क्योंकि शिर्क (द्वैत) महा अत्याचार है एवं मुशरिक (मिश्रणवादी) सब से बड़े अत्याचारी।

[4]व्यक्ति से तात्पर्य अन्तिम ईशदूत आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, बाप, दादा का धर्म उनके निकट सही था, इसलिए उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपराध यह बताया कि यह तुम्हें उन पूज्यों से रोकना चाहता है जिनकी तुम्हारे पिता उपासना करते रहे।

مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۭ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

अतिरिक्त कोई बात नहीं) तथा कहते हैं कि यह तो गढ़ा हुआ आक्षेप है,[1] तथा सत्य उनके पास आ चुका फिर भी काफ़िर यही कहते रहे कि यह तो खुला हुआ जादू है ।[2]

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ۝

(४४) तथा इन (मक्कावासियों को) न तो हमने किताबें प्रदान कर रखी हैं जिन्हें ये पढ़ते हों तथा न उनके पास आप से पूर्व कोई सतर्क करने वाला आया ।[3]

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝

(४५) तथा इनसे पूर्व के लोगों ने भी हमारी बातों को झूठ लाया था तथा उन्हें हमने जो दे रखा था ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे, तो उन्होंने मेरे दूतों को झुठलाया, (फिर देख) कि मेरी यातना की क्या (कठोर) अवस्था हुई ।[4]

---

[1]दूसरे هذا का संकेत पवित्र ईश्वाणी क़ुरआन की ओर है, जिसे उन्होंने गढ़ा हुआ आक्षेप एवं झूठ घोषित किया ।

[2]पवित्र क़ुरआन को प्रथम गढ़ा हुआ झूठ कहा और यहाँ प्रत्यक्ष जादू । प्रथम का सम्बन्ध क़ुरआन के भावार्थ एवं अर्थ से है, दूसरे का सम्बन्ध क़ुरआन के चमत्कारिक वाक्यक्रम तथा भाषा शैली, चमत्कार एवं अलंकार से । (फ़तहुल क़दीर)

[3]इसलिए कि वे कामना करते थे कि उनके पास भी कोई ईशदूत आये तथा कोई आकाशीय ग्रन्थ अवतरित हो, किन्तु जब यह वस्तुयें आयीं तो नकार दिया ।

[4]यह मक्का के मूर्तिपूजकों को सावधान किया जा रहा है कि तुमने झुठलाने तथा इंकार का जो मार्ग अपनाया है वह अति हनिकारक है । तुमसे पूर्व के समुदाय भी इसी मार्ग पर चलकर ध्वस्त एवं नाश हुए हैं, जबकि यह समुदाय धन, सम्पत्ति, शक्ति एवं बल तथा आयु में तुमसे बढ़कर थे, तुम तो उनके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचते । इसके उपरान्त वह अल्लाह के प्रकोप से नहीं बच सके । इसी विषय को *सूर: अहकाफ़* की आयत २६ में वर्णित किया गया है ।

قُلْ إِنَّمَآ أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا۟ لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَٰدَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا۟ ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَىْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

(४६) कह दीजिए कि मैं तुम्हें केवल एक ही बात की शिक्षा देता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए (स्वच्छ भाव से दुराग्रह को त्यागकर) दो-दो मिलकर अथवा अकेले-अकेले खड़े होकर विचार तो करो, तुम्हारे इस साथी को कोई उन्माद नहीं ।[1] वह तो तुम्हें एक अत्यन्त (कड़ी) यातना के आने से पूर्व सर्तक करने वाला है ।[2]

قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

(४७) कह दीजिए कि जो बदला मैं तुम से माँगू वह तुम्हारे लिये है ।[3] मेरा बदला तो अल्लाह पर है, वह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानता है ।

---

[1]अर्थात मैं तुम्हें तुम्हारे वर्तमान व्यवहार से डराता तथा एक ही बात की शिक्षा देता हूँ, तथा वह यह कि तुम दुराग्रह एवं अहंकार छोड़कर मात्र अल्लाह के लिए एक-एक, दो-दो होकर मेरे विषय में विचार करो कि मेरा जीवन तुम्हारे बीच गुज़रा है और अब भी जो आमन्त्रण मैं तुम्हें दे रहा हूँ क्या उसमें कोई ऐसी बात है जिससे यह बात लग रही हो कि मेरे अन्दर उन्माद है। यदि तुम जातीय पक्षपात तथा मनमानी से उच्च होकर सोचोगे तो अवश्य तुम समझ जाओगे कि तुम्हारे साथी में कोई उन्माद नहीं है।

[2]अर्थात वह तो मात्र तुम्हारे मार्ग दर्शाने के लिए आया है ताकि तुम उस घोर यातना से बच जाओ जो संमार्ग न अपनाने के कारण तुम्हें भुगतनी पड़ेगी। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन सफ़ा पर्वत पर चढ़ गये तथा फ़रमाया : يا صباحاه जिसे सुनकर कुरैश एकत्र हो गये। आप ने फ़रमाया बताओ यदि मैं तुम्हें सूचना दूँ कि शत्रु तुम पर प्रात: अथवा संध्या को प्रहार करने वाला है तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे ? उन्होंने कहा, क्यों नहीं ? आपने फ़रमाया, सुन लो कि मैं तुम्हें कड़ी यातना के आगमन से पहले सावधान करता हूँ। यह सुनकर अबू लहब ने कहा «تَبًّا لَكَ! أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟» तेरा नाश हो, क्या इसलिए तूने हमें एकत्र किया था ? जिस पर अल्लाह ने सूर: ﴿تَبَّتْ يَدَآ أَبِى لَهَبٍ﴾ अवतरित की (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: सबा*)

[3]इसमें अपनी नि:स्वार्थता तथा सांसारिक धन-साधन से अरूचि को व्यक्त किया है ताकि उनके दिलों में यदि यह शंका पैदा हो कि इस नबूअत के दावे से इसका आशय कहीं माया-मोह (संसार कामना) तो नहीं, तो वह दूर हो जाये।

(४८) कह दीजिए कि मेरा प्रभु सत्य (सच्ची प्रकाशना) अवतरित करता है,[1] वह प्रत्येक गुप्त बात (परोक्ष) का जानने वाला है ।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾

(४९) कह दीजिए, सत्य आ चुका असत्य न तो प्रथम बार उभरा न पुन: उभर सकेगा ।[2]

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾

(५०) कह दीजिए कि यदि मैं भटक जाऊँ तो मेरे भटकने (का भार) मुझ पर ही है तथा यदि मैं सत्यमार्ग पर हूँ तो उस प्रकाशना के कारण जो मेरा प्रभु मुझ पर करता है ।[3] वह

قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

---

[1] قَذَفَ का अर्थ तीर एवं पत्थर चलाना भी है तथा बात करना भी । यहाँ दूसरे अर्थ में है, अर्थात वह सत्य के साथ वार्तालाप करता है, अपने रसूलों पर प्रकाशना (वह्यी) भेजता है तथा उनके द्वारा लोगों के लिए सत्य स्पष्ट करता है । जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ﴾

"अपने भक्तों में से जिसे चाहता है फ़रिश्तों द्वारा अपनी प्रकाशना (वह्यी) से सुशोभित करता है ।" (*अल-मोमिन*-१५)

[2] हक़ से तात्पर्य क़ुरआन तथा बातिल (अनृत) से तात्पर्य कुफ़्र (अविश्वास) तथा शिर्क (अनेकेश्वरवाद है) । भावार्थ है अल्लाह की ओर से अल्लाह का धर्म एवं उसका धर्मशास्त्र क़ुरआन आ गया है, जिससे अनृत (असत्य) संकुचित एवं समाप्त हो गया है । अब वह सर उठाने योग्य नहीं रहा, जैसे फ़रमाया : ﴿ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ﴾ (अल-अम्बिया-१८) हदीस में आता है कि जिस दिन मक्का विजय हुआ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबा में प्रवेश किया । चारों ओर मूर्तियाँ स्थापित थीं, आप धनुष (कमान) की नोंक से उन मूर्तियों को मारते जाते थे तथा यह आयत एवं सूर: बनी इस्राईल की आयत ﴿ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ﴾ पढ़ते जाते थे । (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबु इज़ालतिल अस्नाम मिन हौलिल काब:)

[3] अर्थात भलाई सब अल्लाह की ओर से है, तथा अल्लाह ने जो प्रकाशना तथा प्रत्यक्ष सत्य अवतरित फ़रमाया है उसमें संमार्ग तथा निर्देश है, संमार्ग लोगों को उसी से मिलता है । फिर जो भटकता है तो उसमें उसकी अपनी ही सुस्ती तथा मनोकांक्षा का हस्तक्षेप होता है । अत: उसका भार भी उसी पर होगा । आदरणीय अबदुल्लाह बिन मसऊद जब किसी प्रश्नकर्ता के उत्तर में अपनी ओर से कुछ कहते तो फ़रमाते :

अत्यन्त सुनने वाला अत्यन्त निकट है ।[1]

(५१) तथा यदि आप (वह समय) देखें जबकि ये काफ़िर घबराये फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई परिस्थिति न होगी [2] तथा निकट के स्थान से पकड़ लिये जायेंगे ।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ فَزِعُوا۟ فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا۟ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾

(५२) तथा उस समय कहेंगे कि हम इस (क़ुरआन) पर ईमान लाये परन्तु इतने दूर स्थान से (अभीष्ट वस्तु) कैसे हाथ आ सकती है ।[3]

وَقَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِهِۦ وَأَنَّىٰ لَهُمُ ٱلتَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

(५३) तथा इससे पूर्व तो उन्होंने इससे कुफ़्र किया था तथा दूर-दूर से बिना देखे ही फेंकते रहे ।[4]

وَقَدْ كَفَرُوا۟ بِهِۦ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِٱلْغَيْبِ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

«أَقُولُ فِيهَا بِرَأْيِي ؛ فَإِنْ يَكُنْ صَوَابًا فَمِنَ اللهِ، وإِنْ يَكُنْ خَطَأً فَمِنِّي وَمِنَ الشَّيطَانِ، واللهُ وَرَسُولُهُ بَرِيئَانِ مِنْهُ» .

"मैं इसमें अपने विचार से कह रहा हूँ यदि सही हो तो अल्लाह की ओर से और यदि ग़लत हो तो मेरी तथा शैतान की ओर से है, एवं अल्लाह तथा उसका रसूल इससे अलग हैं ।" (इब्ने कसीर)

[1]जैसे हदीस में फ़रमाया,

«إِنَّكُمْ لا تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلَا غَائِبًا، إِنَّمَا تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِيبًا مُجِيبًا» .

'तुम बहरे, अनुपस्थित को नहीं पुकारते हो अपितु उसे पुकार रहे हो जो सुनने वाला, समीप तथा स्वीकार करने वाला है ।" (बुख़ारी, किताबुद्दुआ, बाबुद दुआ इज़ा अला अक़ब:)

[2] فَلَا فَوْتَ कहीं भाग नहीं सकेंगे, क्योंकि वह अल्लाह की पकड़ में होंगे । यह महशर के मैदान का वर्णन है ।

[3] تَنَاوُشْ का अर्थ पकड़ना है, अर्थात अब परलोक में उन्हें ईमान किस प्रकार प्राप्त हो सकता है जबकि संसार में उससे भागते रहे । मानो आख़िरत (परलोक) ईमान के लिए दुनिया के सापेक्ष दुरस्थ है, जैसे दूर की वस्तु को पकड़ना संभव नहीं, आख़िरत में ईमान लाने का अवसर नहीं ।

[4]अर्थात अपने अनुमान से कहते रहे कि क़यामत (प्रलय) तथा हिसाब आदि नहीं, या क़ुरआन के विषय में कहते रहे कि यह जादू, गढ़ा हुआ झूठ तथा पूर्वजों की कथा है, अथवा मोहम्मद

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा उनकी इच्छाओं एवं उनके मध्य पर्दा डाल दिया गया[1] जैसेकि इससे पूर्व भी इन जैसों के साथ किया गया, [2] वे भी (इन्ही की भाँति) संदेह एवं दुविधा में (पड़े हुए) थे ।[3]

سُورَةُ فَاطِرٍ

सूरतु फ़ातिर-३५

सूरः फ़ातिर मक्का में अवतरित हुई, इसमें पैंतालीस आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا أُولِي أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ

(१) उस अल्लाह के लिए समस्त प्रशंसायें हैं जो (सर्वप्रथम) आकाशों एवं धरती का उत्पन्न करने वाला[4] तथा दो-दो, तीन-तीन तथा चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को अपना दूत बनाने

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संदर्भ में कहते रहे कि यह तांत्रिक है, भविष्यवेत्ता है; कवि है अथवा उन्मादग्रस्त है, जबकि किसी बात का कोई प्रमाण (युक्ति) इनके पास नहीं थी ।

[1]अर्थात आख़िरत (परलोक) में वह चाहेंगे कि उनका ईमान स्वीकार कर लिया जाये, यातना से उनकी मुक्ति हो जाये, किन्तु उनके तथा उनकी आकांक्षा के बीच पर्दा डाल दिया जायेगा अर्थात उनकी आकांक्षा अस्वीकार कर दी जायेगी ।

[2]अर्थात पिछले समुदायों का ईमान भी उस समय स्वीकार नहीं किया गया जब वह प्रकोप के दर्शन के पश्चात ईमान लाये ।

[3]अत: अब प्रकोप के दर्शन के पश्चात इनका ईमान भी कैसे स्वीकार्य हो सकता है ? आदरणीय कतादह फ़रमाते हैं, "शंका एवं संदेह से बचो, जो शंका की स्थिति में मरेगा उसी स्थिति में उठेगा तथा जो विश्वास पर मरेगा प्रलय के दिन विश्वास पर ही उठेगा ।" (इब्ने कसीर)

[4]"فَاطِر" (फ़ातिर) का अर्थ है अविष्कारक, प्रारम्भ में अविष्कार करने वाला । यह अल्लाह के सामर्थ्य की ओर संकेत है कि उसने आकाश तथा धरती सर्वप्रथम बिना नमूने के बनाये, तो उसके लिये पुन: इन्सानों को पैदा करना कौन सा कठिन है ?

مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ①

वाला है,[1] सृष्टि में जो चाहे अधिक करता है,[2] अल्लाह (तआला) नि:संदेह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

مَّا يَفْتَحِ ٱللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُۥ مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ②

(२) अल्लाह (तआला) जो दया लोगों के लिए खोल दे तो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं तथा जिसको बन्द कर दे उसके पश्चात उसको कोई प्रारम्भ करने वाला नहीं[3] तथा वही प्रभावशाली तत्वज्ञ है।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَـٰلِقٍ غَيْرُ ٱللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۚ لَآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ③

(३) हे लोगो ! तुम पर जो उपहार अल्लाह (तआला) ने किये हैं उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य भी स्रष्टा है जो तुम्हें आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाये ? उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं तो तुम कहाँ उल्टे जाते हो ?[4]

---

[1]तात्पर्य जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील एवं इज़्राईल फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह संदेश-वाहकों (अम्बिया) की ओर अथवा विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दूत बनाकर भेजता है। इनमें से किसी के दो, किसी के तीन तथा किसी के चार पंख हैं जिनके द्वारा वह धरती पर आते तथा धरती से आकाश पर जाते हैं।

[2]अर्थात कुछ फ़रिश्तों के इससे भी अधिक पंख हैं। जैसे कि हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने मेराज की रात जिब्रील को उनके वास्तविक रूप में देखा, उनके छ: सौ पर थे (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: नजम, बाबु फकान क़ाब कौसैने औ अदना) कुछ ने इसे सामान्य रखा है, जिसमें आँख, मुख, नाक तथा रूप सबका सौन्दर्य सम्मिलित है।

[3]इन्हीं उपहारों में रसूलों का भेजना तथा धर्मशास्त्र अवतरित करना भी है। अर्थात प्रत्येक वस्तु का दाता भी वही है तथा वापस लेने एवं रोकने वाला भी वही। उसके सिवाय न कोई दाता है न उपकारी तथा न रोकने वाला है न संकुचित करने वाला।

[4]अर्थात इस वर्णन एवं स्पष्टीकरण के पश्चात भी तुम अल्लाह के सिवाय किसी अन्य की इबादत करते हो ? تُؤْفَكُونَ यदि أَفَكَ से हो तो अर्थ होगा 'फिरना' तथा यदि إِفْك से हो तो अर्थ है झूठ, जो सच से फिरने का नाम है। अभिप्राय यह है कि तुममें एकेश्वरवाद तथा आख़िरत का इंकार कहाँ से आ गया जबकि तुम मानते हो कि तुम्हारी जीविका देने वाला तथा उत्पत्तिकर्ता अल्लाह है। (फ़तहुल क़दीर)

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ④

(४) तथा यदि वे आपको झुठलायें तो आपसे पूर्व के (समस्त) रसूल भी झुठलाये जा चुके हैं । समस्त कार्य अल्लाह ही की ओर लौटाये जाते हैं ।[1]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ⑤

(५) हे लोगो ! अल्लाह (तआला) का वायदा सत्य है [2] तुम्हें साँसारिक जीवन धोखे में न डाले,[3] तथा न धोखेबाज (छली शैतान) तुम्हें निश्चिन्तता में लिप्त करे ।[4]

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑥

(६) (याद रखो) ! शैतान तुम्हारा शत्रु है तुम उसे शत्रु जानो, [5] वह तो अपने गिरोह को केवल इस लिए बुलाता है कि वे सब नरक में जाने वाले हो जायें ।

---

[1]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को साँत्वना है कि आप को झुठलाकर यह कहाँ जायेंगे ? अन्ततः सभी विषयों का निर्णय तो हमें ही करना है । जैसे पिछले समुदायों ने अपने पैग़म्बरों को झुठलाया तो उन्हें सिवाय विनाश के क्या मिला ? अतः यह भी यदि न रूके तो इन्हें नाश करना हमारे लिए कठिन नहीं है ।

[2]कि प्रलय की स्थापना होगी तथा अच्छे, बुरे कर्मों का प्रतिकार दिया जायेगा ।

[3]अर्थात परलोक के उन उपहारों से निश्चिन्त न कर दे जो अल्लाह तआला अपने भक्तों तथा रसूलों के अनुयाईयों के लिये तैयार कर रखे हैं । तो इस संसार के सामयिक आनन्द में खोकर परलोक के स्थाई सुखों की अनदेखी न करो ।

[4]उसके दाव तथा छल से बचकर रहो, इसलिए कि वह बड़ा धोखेबाज़ है, तथा उसका उद्देश्य ही तुम्हें धोखे में रखकर स्वर्ग से वंचित करना है, यही शब्द *सूरः लुकमान* ३३ में भी गुज़र चुके हैं ।

[5]अर्थात उससे कड़ा बैर रखो, उसकी धोखा-धड़ी से बचो जैसे शत्रु से बचाव के लिए मनुष्य करता है । दूसरे स्थान पर इसी विषय का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

﴿أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۚ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا﴾

"क्या तुम उस शैतान तथा उसकी सन्तान को मुझे त्यागकर अपना मित्र बनाते हो, हालांकि वह तुम्हारे शत्रु हैं अत्याचारियों के लिए बुरा बदला है ।" *(अल-कहफ़-५०)*

(७) जो लोग काफ़िर हुए उनके लिए कठोर दण्ड है तथा जो लोग ईमान लाये एवं सत्कर्म किये उनके लिए क्षमा तथा (अति) उत्तम बदला है ।[1]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

(८) क्या वह व्यक्ति जिसके लिए उसके कुकर्म सुशोभित कर दिये गये हैं तो वह उन्हें अच्छा समझता है, (क्या वह संमार्ग प्राप्त व्यक्ति जैसा है ?)[2] (विश्वास करो) अल्लाह जिसे चाहे भटका देता है तथा जिसे चाहे मार्गदर्शन देता है,[3] तो आपको उन पर दुखी होकर अपने प्राण को कष्ट में न डालना चाहिये[4] ये जो कुछ कर रहे हैं उससे नि:संदेह अल्लाह भली-भाँति अवगत है ।[5]

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝

(९) तथा अल्लाह ही हवायें चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम बादलों को

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ

---

[1]अल्लाह तआला ने अन्य स्थानों की भाँति यहाँ भी ईमान के साथ सत्कर्मों की चर्चा करके उस का महत्व स्पष्ट किया है ताकि ईमानवाले सत्कर्म से किसी क्षण निश्चिन्त न रहें, क्योंकि बड़े प्रतिफल का वायदा उस ईमान पर ही है जिसके साथ सत्कर्म होगा ।

[2]जिस प्रकार काफ़िर तथा दुराचारी हैं,वह कुफ़्र, शिर्क, कुकर्म एवं दुराचार करते हैं और समझते यह हैं कि वह अच्छा कर रहे हैं । क्या फिर ऐसा व्यक्ति जिसे अल्लाह ने पथभ्रष्ट कर दिया हो, उसके बचाव के लिए आप के पास कोई उपाय है ? अथवा यह उसके बराबर है जिसे अल्लाह ने संमार्ग प्रदान किया है ? उत्तर नकारात्मक ही है, नहीं कदापि नहीं ।

[3]अल्लाह तआला अपने न्याय के अनूरूप अपनी विधि के अनुसार उसको पथभ्रष्ट करता है जो निरन्तर अपनी करतूतों से स्वयं उसका पात्र होता है, तथा संमार्ग उसे देता है जो उसका अभिलाषी होता है ।

[4]क्योंकि अल्लाह तआला का प्रत्येक काम हिक्मत तथा पूरे ज्ञान पर आधारित है । अत: किसी की पथभ्रष्टता पर इतना शोक न करें कि अपने प्राण ख़तरे में डाल लें ।

[5]अर्थात उनका कोई कर्म अथवा कथन उससे छिपा नहीं है, अभिप्राय यह है कि उनके साथ अल्लाह का व्यवहार एक सर्वज्ञ, सर्वसूचित तथा तत्वदर्शी का है, साधारण राजाओं का नहीं जो अपने अधिकार का अललटप प्रयोग करते हैं । कभी सलाम करने से खिन्न हो जाते हैं तथा कभी अपशब्द पर ही पुरस्कार से सम्मानित करते हैं ।

سَحَابًا فَسُقْنَٰهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَٰلِكَ ٱلنُّشُورُ ⑨

सूखी धरती की ओर ले जाते हैं तथा उससे उस धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देते हैं। इसी प्रकार पुन: जीवित होकर उठना (भी) है।[1]

مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلْعِزَّةَ فَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ ٱلْكَلِمُ ٱلطَّيِّبُ وَٱلْعَمَلُ ٱلصَّٰلِحُ يَرْفَعُهُۥ ۚ وَٱلَّذِينَ يَمْكُرُونَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ

(१०) जो व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता हो तो अल्लाह (तआला) के लिये ही समस्त सम्मान है।[2] समस्त पवित्र वाक्य उसी की ओर चढ़ते हैं,[3] तथा सत्कर्म उनको उच्च करता है,[4] और जो लोग बुराई के दाँव-घात में लगे रहते

---

[1]अर्थात जिस प्रकार वर्षा करके हम सूखी धरती को हरी कर देते हैं, इसी प्रकार प्रलय के दिन तमाम मृत इन्सानों को भी हम जीवित कर देंगे। हदीस में आता है कि मनुष्य का पूरा शरीर गल जाता है मात्र रीढ़ की अस्थि का एक सूक्ष्म अंश सुरक्षित रहता है, इसी से उसकी पुन: उत्पत्ति तथा रचना होगी। (सहीह बुख़ारी)

[2]अर्थात जो चाहता है कि लोक-परलोक में उसे सम्मान मिले तो वह अल्लाह की आज्ञा पालन करे उससे यह उद्देश्य प्राप्त हो जायेगा। इसलिए की लोक-परलोक का स्वामी अल्लाह ही है, सब सम्मान उसी के पास हैं वह जिसे सम्मान दे वही सम्मानित होगा, जिसको वह अपमानित कर दे संसार की कोई शक्ति उसे सम्मान नहीं दे सकती। दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿ٱلَّذِينَ يَتَّخِذُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ ٱلْعِزَّةَ فَإِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا﴾ (अन्निसा -१३९)

[3]الكَلِم बहुवचन है كَلِمة का। स्वच्छ (पवित्र) शब्दों से अभिप्राय अल्लाह की पवित्रता, प्रशंसा, क़ुरआन पढ़ना, अच्छाई का आदेश देना तथा बुराई से रोकना है। चढ़ते हैं का अर्थ अंगीकार करना है अथवा फ़रिश्तों का उन्हें लेकर आकाश पर चढ़ना है, ताकि अल्लाह उनका प्रतिफल प्रदान करे।

[4]يَرفَعُه में सर्वनाम किसकी ओर फिरता है ? कुछ कहते हैं कि الكَلِم الطَّيب की ओर, अर्थात पुण्य कर्म स्वच्छ शब्द को ऊपर अल्लाह की ओर ले जाते हैं। अर्थात मात्र मुख से अल्लाह का स्मरण (पवित्रता तथा प्रशंसा) कुछ नहीं जब तक उसके साथ सत्कर्म अर्थात आदेशों तथा अनिवार्य कर्मों का पालन न हो। कुछ कहते हैं कि يَرفعُه में सर्वनाम कर्ता अल्लाह की ओर फिरता है। अर्थ यह है कि अल्लाह तआला सत्कर्म को पवित्र शब्दों से उच्च करता है, क्योंकि सत्कर्म से ही इस बात का प्रमाण मिलता है कि इसका करने वाला वस्तुत: अल्लाह की पवित्रता एवं प्रशंसा करने में शुद्ध है। (फ़तहुल क़दीर) मानो कथन, कर्म के विना अल्लाह के समक्ष अमान्य है।

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ⑩

हैं[1] उनके लिए अत्यन्त कठोर यातनायें हैं तथा उनका यह पाखण्ड नाश हो जायेगा ।[2]

وَاللَّهُ خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِن مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنقَصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ

(११) (लोगो,) अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से पैदा किया[3] फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े (नर-नारी) बना दिया है। नारियों का गर्भ धारण करना तथा शिशु का जन्म लेना सभी उसके ज्ञान में है,[4] तथा जो दीर्घ आयु वाला आयु दी जाये तथा जिस किसी की आयु घटे[5]

---

[1]गुप्त रूप से किसी को क्षति पहुँचाने के उपाय को मक्र कहते हैं, कुफ़ तथा शिर्क करना भी मक्र है कि इस प्रकार से अल्लाह के मार्ग को क्षति पहुँचाई जाती है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या की जो योजना मक्का के काफ़िर करते रहे वह भी मक्र है, पाखंड (दिखावा) भी मक्र है यह शब्द सामान्य है, मक्र के सभी रूपों को सम्मिलित है।

[2]अर्थात उनका मक्र (कपट) भी नाश होगा तथा उस का भार भी उन्हीं पर पड़ेगा, जैसे फ़रमाया : ﴿وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ﴾ (फ़ातिर-४३)

[3]अर्थात तुम्हारे पिता आदम को मिट्टी से फिर तत्पश्चात तुम्हारी जाति (वंशधारा) को स्थापित रखने के लिए इन्सान की उत्पत्ति को वीर्य से सम्बन्धित कर दिया जो पुरूष की पीठ से निकल कर स्त्री के गर्भाशय में जाता है।

[4]अर्थात उससे कोई वस्तु छिपी हुई नहीं, यहाँ तक कि धरती पर गिरने वाले पत्तों को तथा धरती के भीतर अन्धकारों में पलने वाली बीज को भी जानता है। (*अल-अनआम-५९*)

[5]इसका अभिप्राय यह है कि लघु आयु तथा अल्प आयु अल्लाह के लेख तथा निर्णय से है। इसके अतिरिक्त आयु लम्बी अथवा छोटी होने के कारण भी हैं। लघुता के कारण में सम्बन्धियों के साथ सदव्यवहार आदि है जैसाकि हदीस में है, तथा अल्पता के कारणों में अधिक पाप (अवज्ञा) का करना है, जैसे किसी की आयु ७० वर्ष है तो अधिकता के कारणों से कभी अल्लाह उसे बढ़ा देता है। तथा कभी उसमें कमी कर देता है जब वे कमी के कारणों को अपनाता है। तथा यह सब कुछ उसने लौह महफ़ूज़ में अंकित किया हुआ है। अत: आयु में यह कमी तथा अधिकता ﴿فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ﴾ के विपरीत नहीं है। इसका समर्थन अल्लाह के इस वचन से भी होता है ﴿يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِندَهُ أُمُّ الْكِتَابِ﴾ (अर्राद-३९) अल्लाह जो चाहता मिटाता तथा लिखता है तथा उस के पास लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पुस्तक) है, (फ़तहुल क़दीर)

إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾

वह सब पुस्तक में अंकित है। अल्लाह (महान) पर यह बात अत्यन्त सरल है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمِن كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा बराबर नहीं दो समुद्र। यह मीठा है प्यास बुझाता है पीने में अच्छा। तथा वह दूसरा खारी है कड़ुवा, तुम इन दोनों से ताज़ा माँस खाते हो तथा वह आभूषण निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो, तथा तुम देखते हो कि बड़ी-बड़ी नवकायें जल को चीरने-फाड़ने वाली[1] उन समुद्रों में हैं ताकि तुम उसकी कृपा (अनुग्रह) की खोज करो और ताकि तुम उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾

(१३) वह रात को दिन में तथा दिन को रात में प्रवेश कराता है तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को उसी ने कार्य में लगा दिया है। प्रत्येक एक निर्धारित अवधि तक चल रहे हैं। यही है अल्लाह[2] तुम सबका पालनहार इसी का राज्य है। तथा जिन्हें तुम उसके अतिरिक्त पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी स्वामी नहीं।[3]

إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ

(१४) यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं [4] तथा यदि (मान लिया

---

[1] مواخر (मवाख़िर) वह नवकायें जो आते-जाते पानी को चीरते गुज़रती हैं। आयत में वर्णित अन्य विषयों का भाष्य सूर: अल-फ़ुरक़ान में गुज़र चुका है।

[2] अर्थात उक्त सभी कार्यों का कर्ता।

[3] अर्थात इतनी हीन वस्तु के भी स्वामी नहीं, न उसे पैदा करने पर सामर्थ्य हैं। قطمير (क़ितमीर) उस झिल्ली को कहते हैं जो खजूर तथा उसके बीज के मध्य होती है, यह पतला सा छिलका गुठली पर लिफ़ाफ़ा (वेष्टन) की भाँति चढ़ा रहता है।

[4] अर्थात यदि तुम उन्हें कठिनाईयों में पुकारो तो वह तुम्हारी गुहार सुनते ही नहीं हैं,

وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

कि) सुन भी लें तो स्वीकार नहीं करेंगे,[1] बल्कि क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क को स्पष्टत: नकार देंगे ।[2] आपको कोई भी (अल्लाह तआला) जैसा जानकार सूचनायें न देगा ।[3]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

(१५) हे लोगो! तुम अल्लाह के भिखारी हो[4] तथा अल्लाह ही निस्पृह[5] गुणवान है ।[6]

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

(१६) यदि वह चाहे तो तुमको नष्ट कर दे तथा एक नयी सृष्टि उत्पन्न कर दे ।[7]

क्योंकि वह जड़ हैं अथवा मनों मिट्टी के नीचे गड़े हुए ।

[1]अर्थात यदि मान लिया जाये कि वह सुन भी लें तो व्यर्थ, इसलिए की वह तुम्हारी विनय के अनुसार तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते ।

[2]तथा कहेंगे ما كنتم إيانا تعبدون "तुम हमारी उपासना नहीं करते थे" (यूनुस-२८) ﴿إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ﴾ "हम तो तुम्हारी उपासना से बेख़बर थे ।" (यूनुस-२९) इस आयत से यह भी ज्ञात होता है कि अल्लाह के सिवाय जिन की इबादत की जाती है वह सब पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं होंगी, वरन् उनमें चेतनशील (फ़रिश्ते, जिन्न, शैतान तथा धर्मात्मा) भी होंगे । तब ही तो वे इंकार करेंगे, तथा यह भी ज्ञात हुआ कि उन्हें आवश्यकता पूर्ति के लिए पुकारना शिर्क है ।

[3]इसलिए कि उसकी भाँति भरपूर ज्ञान किसी के पास भी नहीं है । वही सभी विषय की वास्तविकता एवं तथ्य से पूर्णत: अवगत है, जिसमें इन पुकारे जाने वालों की विवशता, पुकार को न सुनना तथा प्रलय के दिन इसका इंकार करना भी सम्मिलित है ।

[4]"ناس" शब्द सर्वसाधारण के लिए है जिसमें अम्बिया, धर्मात्मा सभी आ जाते हैं । अल्लाह के द्वार के सभी भिखारी हैं किन्तु अल्लाह को किसी की आवश्यकता नहीं ।

[5]वह इतना निस्पृह है कि सब लोग यदि उसकी अवज्ञा करने वाले बन जायें तो इससे उसके राज्य में कोई कमी, तथा सब उसके आज्ञाकारी बन जायें तो इससे उसकी शक्ति में कोई अधिकता नहीं होगी । अपितु अवज्ञा से अपनी ही हानि होगी तथा उसकी वन्दना एवं आज्ञापालन से मानव का अपना ही लाभ है ।

[6]प्रशंसित है अपने अनुग्रहों के कारण, क्योंकि प्रत्येक उपकार जो उसने अपने बन्दों के साथ किये हैं उस पर वह प्रशंसा एवं कृतज्ञता का अधिकारी है ।

[7]यह भी उसकी निस्पृहता की मर्यादा का एक उदाहरण है कि यदि वह चाहे तो तुम्हें नष्ट

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा न अंधकार एवं प्रकाश ।[1]

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾

(२१) तथा न छाया एवं न धूप ।[2]

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जीवित एवं मृत समान नहीं हो सकते,[3] तथा अल्लाह (तआला) जिसको चाहता है सुनवा देता है [4] तथा आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं ।[5]

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾

(२३) आप तो केवल डराने वाले हैं ।[6]

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۗ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

(२४) हमने ही आपको सत्य देकर शुभसूचना सुनाने वाला तथा डराने वाला बनाकर भेजा है, तथा कोई समुदाय ऐसा नहीं हुआ जिसमें कोई डराने वाला न गुज़रा हो ।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ

(२५) तथा यदि ये लोग आपको झुठला दें तो जो लोग इनसे पूर्व गुज़रे हैं उन्होंने भी

---

[1]अन्धें से अभिप्राय काफ़िर तथा आँखवाले से ईमानवाला, अन्धेरों से अनृत तथा प्रकाश से सत्य तात्पर्य है । असत्य (अनृत) के बहुत प्रकार हैं, इसलिए उसके लिए बहुवचन का तथा सत्य अनेक नहीं, इसलिए उसके लिए एक वचन का रूप प्रयोग किया ।

[2]यह पुण्य तथा यातना अथवा स्वर्ग तथा नरक की मिसाल है ।

[3]जीवित से ईमानवाला तथा मृत से काफ़िर अथवा ज्ञानी तथा मूर्ख अथवा समझदार एवं नासमझ अभिप्राय है ।

[4]अर्थात जिसे अल्लाह संमार्ग दिखाने वाला होता है तथा स्वर्ग उसके भाग्य में होती है उसे तर्क एवं प्रमाण सुनने तथा फिर उसे स्वीकार करने की संमति प्रदान कर देता है ।

[5]अर्थात जिस प्रकार समाधियों (क़ब्रों) में मृत लोगों को कोई बात सुनाई नहीं जा सकती, इसी प्रकार जिनके दिलों को कुफ़्र ने मृत कर दिया है, हे संदेशवाहक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तू उन्हें सत्य की बात नहीं सुना सकता । भावार्थ यह हुआ कि जिस प्रकार मरने और गड़ने के पश्चात मृत कोई लाभ नहीं उठा सकता, इसी प्रकार काफ़िर तथा मुशरिक जिनके भाग्य में दुर्भाग्य अंकित है, निमन्त्रण तथा सत्य भाषण से उन्हें लाभ नहीं होता ।

[6]अर्थात आपका काम मात्र धर्म का प्रचार-प्रसार करना है, सत्य मार्ग दिखाना अथवा पथभ्रष्ट बनाना अल्लाह के अधिकार में है ।

مِن قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَبِٱلزُّبُرِ وَبِٱلْكِتَٰبِ ٱلْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾

झुठलाया था, उनके पास भी उनके पैग़म्बर चमत्कार, ग्रन्थ एवं स्पष्ट किताबें लेकर आये थे ।[1]

ثُمَّ أَخَذْتُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया तो मेरा प्रकोप कैसा हुआ ।[2]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ أَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجْنَا بِهِۦ ثَمَرَٰتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَٰنُهَا ۚ وَمِنَ ٱلْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَٰنُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾

(२७) क्या आपने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह (तआला) ने आकाश से पानी उतारा फिर हमने उसके द्वारा विभिन्न रंगों के फल निकाले[3] तथा पर्वतों के विभिन्न भाग हैं, सफेद एवं लाल कि उनके भी रंग विभिन्न हैं तथा अति गहरे काले ।[4]

وَمِنَ ٱلنَّاسِ وَٱلدَّوَآبِّ وَٱلْأَنْعَٰمِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَٰنُهُۥ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا

(२८) तथा इसी प्रकार मनुष्यों तथा जानवरों एवं चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उनके रंग भिन्न हैं ।[5] अल्लाह से उसके वही भक्त डरते

---

[1]ताकि कोई समुदाय यह न कह सके कि हमें तो कुफ़्र तथा ईमान का पता ही नहीं । इसी कारण से अल्लाह ने प्रत्येक समुदाय में नबी भेजा, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِى كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا﴾ (अन-नहल-३६)

[2]कितने घोर प्रकोप ने उन्हें धर लिया तथा उन्हें ध्वस्त तथा नाश कर दिया ।

[3]अर्थात जिस प्रकार ईमानदार तथा काफ़िर, सदाचारी एवं दुराचारी दोनों प्रकार के लोग हैं, इसी प्रकार अन्य सृष्टि में भी भेद तथा विभिन्नता है । उदाहरणार्थ, फलों के रंग भी विभिन्न हैं, स्वाद एवं सुगन्ध में भी परस्पर भिन्न, यहाँ तक कि एक ही फल के भी कई-कई रंग तथा स्वाद हैं, जैसे खजूर है, अंगूर है, सेब है तथा अन्य कुछ फल हैं ।

[4]इसी प्रकार पर्वत तथा उसके भाग अथवा मार्ग तथा धारियाँ विभिन्न रंगों के हैं, सफेद, लाल तथा अति घोर काले। جُدَدٌ बहुवचन है جُدَّة का, मार्ग अथवा लकीरें । غرابيب बहुवचन है غِرْبِيب का, तथा سُوْدٌ - أسود (काला) का बहुवचन है । जब काले रंग की गंभीरता को व्यक्त करना हो तो أسود के साथ غِربِيب का शब्द प्रयोग किया जाता है । أسود غربيب का अर्थ होता है, अति घोर काले ।

[5]अर्थात मानव तथा पशु भी सफेद, काले तथा पीले वर्ण के होते हैं ।

يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾

हैं जो ज्ञान रखते हैं ।[1] वास्तव में अल्लाह (तआला) अत्यन्त महान क्षमा करने वाला है ।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾

(२९) जो लोग अल्लाह की किताब का पाठ करते हैं[3] तथा नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं[4] तथा जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से गुप्त तथा स्पष्ट रूप से ख़र्च करते हैं,[5] वे ऐसे व्यवपार के उम्मीदवार हैं जो कभी भी हानि में न होगा ।[6]

---

[1]अर्थात अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनात्मक गुण को वही जान एवं समझ सकतें हैं जो ज्ञानी हैं, इससे तात्पर्य किताब (पवित्र क़ुरआन), हदीस तथा दैवी भेदों का ज्ञान है तथा जितना उन्हें प्रभु का आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है उतना ही वह प्रभु से डरते हैं मानो जिनमें अल्लाह का डर नहीं है समझ लो कि सही ज्ञान से भी वह वंचित हैं । सुफ़्यान सौरी फ़रमाते हैं कि ज्ञानियों के तीन प्रकार हैं । अल्लाह का ज्ञानी तथा अल्लाह के आदेश का ज्ञानी, यह वह है जो अल्लाह से डरता तथा उसके आदेशों तथा सीमाओं को जानता है । दूसरा मात्र अल्लाह का ज्ञानी, जो अल्लाह से तो डरता है किन्तु उसकी सीमाओं तथा उसके आदशों को नहीं जानता । तीसरा मात्र अल्लाह के आदेशों का ज्ञानी, जो उसके निर्धारित सीमाओं एवं आदेशों से अवगत है किन्तु अल्लाह के भय से शून्य है । (इब्ने कसीर)

[2]यह प्रभु से भय रखने का कारण है कि वह इस बात पर सामर्थ्यवान है कि अवज्ञाकारी को दण्ड दे तथा क्षमा-याचना करने वाले के दोष क्षमा कर दे ।

[3]अल्लाह की किताब से तात्पर्य पवित्र ईश्वाणी क़ुरआन है, 'तिलावत (पाठ) करते हैं' अर्थात नित्य उसकी व्यवस्था करते हैं ।

[4]नमाज़ की स्थापना का अभिप्राय होता है नमाज़ उस ढंग से पढ़ना जो अभीष्ट (उसका उद्देश्य) है, अर्थात निर्धारित समय तथा उसके अनिवार्य कर्मों में संतुलन तथा विनम्रता एवं विनय के प्रयोजन के साथ पढ़ना ।

[5]अर्थात रात और दिन खुले तथा छिपे दोनों ढंग से आवश्यकतानुसार ख़र्च करते हैं । कुछ के निकट छिपे से ऐच्छिक दान तथा खुले से अनिवार्य दान (ज़कात) अभिप्राय है ।

[6]अर्थात ऐसे लोगों का फल अल्लाह के यहाँ निश्चित है जिसमें मंदे अथवा कमी की संभावना नहीं ।

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

(३०) ताकि उनके पारिश्रमिक पूर्णरूप से उनको दे तथा उनको अपनी कृपा से और अधिक प्रदान करे।[1] निःसंदेह वह अत्यन्त क्षमाशील गुणग्राही है।[2]

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

(३१) तथा यह किताब जो हमने आपके पास प्रकाशना के द्वारा भेजी है यह पूर्णरूप से सत्य है[3] जो अपने से पूर्व की किताबों की भी पुष्टि करती है।[4] निःसंदेह अल्लाह (तआला) अपने भक्तों की पूर्ण जानकारी रखने वाला भली-भाँति देखने वाला है।[5]

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا

(३२) फिर (इस) किताब[6] का उत्तराधिकारी

---

[1] لِيُوَفِّيَهُم सम्बन्धित है لن تبور से, अर्थात यह व्यवपार मंदे से इसलिए सुरक्षित है कि अल्लाह पुण्य के कर्मों पर पूरा फल प्रदान करेगा, अथवा लुप्त क्रिया से सम्बन्धित है कि वह पुण्य के कर्म इसलिए करते हैं अथवा अल्लाह ने इसकी ओर मार्ग दिखाया ताकि उन्हें प्रतिफल दे।

[2]यह توفيه तथा अधिकता का कारण है, कि वह अपने ईमानवाले भक्तों को क्षमा करने वाला है इस प्रतिबन्ध के साथ कि वह स्वच्छ मन से क्षमा माँगें, उनकी आज्ञाकारिता एवं पुण्य के कर्मों का गुणग्राही है इसीलिए वह केवल प्रतिफल ही नहीं देगा अपितु अपनी दया तथा अनुग्रह से और अधिक भी प्रदान करेगा।

[3]अर्थात जिस पर तेरे लिये तथा तेरे समुदाय के लिये कार्यरत होना अनिवार्य है।

[4]आदिग्रन्थ तौरात तथा इंजील आदि की, यह इस बात का प्रमाण है कि पवित्र क़ुरआन उस अल्लाह का अवतरित किया है जिसने पूर्व के धर्मग्रन्थ अवतरित किये थे, जब ही तो दोनों एक-दूसरे का समर्थन एवं पुष्टि करते हैं।

[5]यह उसके ज्ञान तथा जानकारी ही का परिणाम है कि उसने नवीन धर्मग्रन्थ अवतरित कर दिया क्योंकि वह जानता है कि आदिग्रन्थ हेर-फेर तथा परिवर्तन से ग्रस्त हो गये हैं और वह मार्गदर्शन के योग्य नहीं।

[6]किताब से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन तथा निर्वाचित बन्दों से मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का समुदाय है, अर्थात हमने इस क़ुरआन का उत्तराधिकारी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों को बनाया है, यह लगभग वही भावार्थ है जो आयत ﴿وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ (अल-बक़रः-१४३) का है।

مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

हमने उन लोगों को बनाया जिनको हमने अपने बन्दों में से चुन लिया। फिर कुछ तो अपने प्राणों पर अत्याचार करने वाले हैं [1] तथा कुछ मध्यम श्रेणी के हैं[2] तथा कुछ उनमें से अल्लाह की सन्मति से पुण्य में उन्नति करते चले जाते हैं।[3] यह बड़ी कृपा है।[4]

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾

(३३) सदैव रहने के वे बाग़ हैं जिनमें ये लोग प्रवेश करेंगे,[5] उसमें वे स्वर्ण के कंगन तथा मोती पहनाये जायेंगे तथा वस्त्र वहाँ उनके रेशम के होंगे।[6]

---

[1]मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों के तीन प्रकार बताये हैं, यह प्रथम प्रकार है जिससे अभिप्राय ऐसे लोग हैं जो कुछ अनिवार्य कर्तव्यों में आलस्य तथा कुछ निषेधित कर्म कर लेते हैं, अथवा कुछ के यहाँ तात्पर्य वे हैं जो छोटी-छोटी त्रुटियाँ कर जाते हैं। उन्हें अपने ऊपर अत्याचार करने वाला इसलिए कहा कि वह अपने कुछ आलस्य के कारण स्वयं को उस उच्च पद से वंचित कर लेंगे जो शेष दो प्रकारों को प्राप्त होंगे।

[2]यह दूसरा प्रकार है अर्थात जो मिले-जुले कर्म करते हैं, अथवा कुछ के निकट वह हैं जो कर्तव्य का पालन तो करते हैं, निषेधों के त्यागी हैं किन्तु कभी उत्तम का त्याग तथा कुछ अवैध कर्म भी उनसे हो जाता है, अथवा वह हैं जो पुनीत तो हैं किन्तु उसमें आगे-आगे नहीं हैं।

[3]यह वे हैं जो धर्म के विषय में पिछले दोनों से अग्रगामी हैं।

[4]अर्थात किताब (धर्मशास्त्र) का उत्तराधिकारी करना तथा प्रतिष्ठा एवं अनुग्रह में श्रेष्ठ (निर्वाचित) करना।

[5]कुछ कहते हैं कि स्वर्ग में केवल अग्रगामी जायेंगे किन्तु यह सही नहीं क़ुरआन का पूर्व वाक्यक्रम इस बात का अभियाची है कि तीनों प्रकार स्वर्गवासी हैं। यह अलग बात है कि अग्रगामी बिना हिसाब के तथा मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात एवं अत्याचारी सिफ़ारिश से अथवा दण्ड भुगतने के पश्चात स्वर्ग में जायेंगे जैसाकि अहादीस से स्पष्ट है। मोहम्मद बिन हनफ़िया का कथन है कि यह दया के पात्र गिरोह है। अत्याचारी अर्थात पापी को क्षमा मिल जायेगी, मध्यम अल्लाह के यहाँ स्वर्ग में होगा तथा पुण्य में अग्रसर होने वाला उच्च श्रेणी में होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[6]हदीस में आता है कि रेशम तथा दीबाज संसार में न पहनो, इसलिए कि जो इसे संसार

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख धन्य है जिसने हमसे शोक दूर किया। नि:संदेह हमारा प्रभु अत्यन्त क्षमाशील एवं क़दर करने वाला है।

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾

(३५) जिसने हमें अपनी कृपा (अनुग्रह) से सदैव रहने वाले स्थान में ला उतारा, जहाँ न हमको कोई कठिनाई पहुँचेगी तथा न हमको कोई थकान पहुँचेगी।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए नरक की अग्नि है, न तोउनकी मौत ही आयेगी कि मर ही जायें तथा न नरक की यातना ही उनसे कम की जायेगी। हम प्रत्येक काफ़िर को ऐसी ही यातना देते हैं।

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ

(३७) तथा वे लोग उसमें चिल्लायेंगे कि हमारे प्रभु ! हमको निकाल ले हम अच्छे कर्म करेंगे उन कर्मों के विपरीत जो किया करते थे।[1] (अल्लाह तआला कहेगा) कि क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसको समझना होता [2] वह समझ सकता तथा तुम्हारे पास

में पहनेगा वह उसे आख़िरत (परलोक) में नहीं पहनेगा। (सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास)

[1]अर्थात दूसरों की इबादत की जगह तेरी इबादत तथा अवज्ञा के स्थान पर आज्ञा का पालन करेंगे।

[2]इससे अभिप्राय कितनी आयु है ? भाष्यकारों ने विभिन्न आयु का वर्णन किया है। कुछ ने कुछ हदीसों से तर्क देते हुए कहा है कि ६० वर्ष की आयु तात्पर्य है। (इब्ने कसीर) किन्तु हमारे विचार से आयु का निर्धारण सही नहीं है, इसलिए कि आयु विभिन्न होती है, कोई युवा अवस्था में, कोई अधेड़ आयु में तथा कोई बुढ़ापे में मरता है, फिर यह समय भी व्यतीत क्षण की भाँति कम नहीं होते अपितु प्रत्येक अवधि विशेषत: लम्बी होती है।

فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾

डराने वाला भी पहुँचा था[1] तो स्वाद चखो कि (ऐसे) अत्याचारियों का कोई सहायता करने वाला नहीं है।

إِنَّ ٱللَّهَ عَٰلِمُ غَيْبِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

(३८) वस्तुत: अल्लाह (तआला) जानने वाला है आकाशों तथा धरती की गुप्त वस्तुओं का,[2] नि:संदेह वही जानने वाला है सीनों की बातों का।[3]

هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُۥ ۖ

(३९) वही ऐसा है जिसने तुम्हें धरती पर बसाया, तो जो व्यक्ति कुफ़्र (इंकार) करेगा उसके कुफ़्र का बोझ उसी पर पड़ेगा। तथा

उदाहणार्थ, यौवनकाल व्यस्क होने से अधेड़ होने तक तथा अधेड़ होने का समय बुढ़ापे तक तथा बुढ़ापे का मौत तक रहता है। किसी को सोच-विचार, शिक्षा ग्रहण करने तथा प्रभावित होने के लिए कुछ वर्ष, किसी को उससे अधिक तथा किसी को इससे भी अधिक समय मिलता है, तथा सबसे यह प्रश्न करना सही होगा कि हमने तुझे इतनी आयु दी फिर तूने सत्य को समझने तथा उसे ग्रहण करने का प्रयास क्यों नहीं किया ?

[1]इससे अभिप्राय अन्तिम ईशदूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, अर्थात स्मरण कराने तथा शिक्षा देने के लिए ईशदूत तथा उनके धर्ममंच के उत्तराधिकारी ज्ञानी जन तथा प्रचारक तेरे पास आये किन्तु तूने समझ-बूझ से काम नहीं लिया न सत्य के प्रचारकों की बातों की ओर ध्यान दिया।

[2]यहाँ इसकी चर्चा से यह भी उद्देश्य हो सकता है कि तुम पुन: संसार में जाने की कामना कर रहे हो तथा दावा कर रहे हो कि अब अवहेलना की जगह आज्ञापालन तथा शिर्क (द्वैत) की जगह तौहीद (अद्वैत) को अपनाओगे, किन्तु हमें ज्ञान है कि तुम ऐसा न करोगे। तुम्हें यदि संसार में फिर भेज दिया जाये तो तुम वही कुछ करोगे जो पहले करते रहे हो, जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया : ﴿وَلَوْ رُدُّوا۟ لَعَادُوا۟ لِمَا نُهُوا۟ عَنْهُ﴾ (*अल-अनआम-२८*) "यदि उन्हें पुन: जगत में भेज दिया जाये तो वह वही कर्म करेंगे जिनसे उन्हें रोका गया था।"

[3]यह पिछली बात का कारण है, अर्थात परमेश्वर (अल्लाह तआला) को आकाश तथा धरती की गुप्त बातों का ज्ञान क्यों न हो जबकि वह अन्तर्यामी (मन की बातों तथा भेदों से) अवगत है।

وَلَا يَزِيدُ الْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके प्रभु के निकट क्रोध ही बढ़ने का कारण बनता है तथा काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र हानि ही को बढ़ाने का कारण होता है।[1]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ط أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَٰوَٰتِ ۚ أَمْ ءَاتَيْنَٰهُمْ كِتَٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّٰلِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

(४०) (आप) कहिए कि तुम अपने (निर्धारित किये हुए) साझीदारों का हाल तो बताओ जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारा करते हो। अर्थात मुझको यह बताओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा (भाग) बनाया है अथवा उनका आकाश में कुछ साझा है, अथवा हमने उनको कोई किताब प्रदान की है कि यह उसके प्रमाण पर दृढ़ हों,[2] बल्कि यह अत्याचारी एक-दूसरे से केवल धोखे की बातों का वादा करते आते हैं।[3]

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ

(४१) निश्चित बात है कि अल्लाह (तआला) आकाशों एवं धरती को थामे हुए है कि वह

---

[1]अर्थात अल्लाह के समक्ष कुफ़्र कोई लाभ नहीं पहुँचायेगा अपितु इससे अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता में भी अधिकता होगी तथा मनुष्य की अपनी क्षति भी अधिक।

[2]अर्थात हमने उन पर कोई किताब (धर्मशास्त्र) अवतरित किया हो, जिसमें यह अंकित हो कि मेरे भी साझी हैं, जो आकाश तथा धरती की रचना में भागीदार तथा साझीदार हैं।

[3]अर्थात इनमें से कोई बात भी नहीं है, अपितु यह परस्पर एक-दूसरे को पथभ्रष्ट करते आये हैं। इनके अगुवा तथा पीर कहते थे कि यह पूज्य (देवी, देवता एवं समाधिस्थल) उन्हें लाभ पहुँचायेंगे तथा उन्हें अल्लाह के समीप कर देंगे तथा उनकी सिफ़ारिश (अभिस्तावना) करेंगे। अथवा यह बातें शैतान मुशरिकों (अनेकेश्वरवादियों) से कहते थे, अथवा इससे तात्पर्य वह वादा है जिसे वह एक-दूसरे के सामने करते थे, कि वह मुसलमानों पर विजय पायेंगे, जिससे उनको अपने कुफ़्र (इंकार) पर अडिग रहने का प्रोत्साहन मिलता था।

أَن تَزُولَاۚ وَلَئِن زَالَتَآ إِنۡ أَمۡسَكَهُمَا مِنۡ أَحَدٍ مِّنۢ بَعۡدِهِۦٓۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

टल न जायें[1] तथा यदि वह टल जायें तो फिर अल्लाह के अतिरिक्त कोई उनको थाम भी नहीं सकता ।[2] वह अत्यन्त सहनशील क्षमा करने वाला है ।[3]

وَأَقۡسَمُواْ بِٱللَّهِ جَهۡدَ أَيۡمَٰنِهِمۡ لَئِن جَآءَهُمۡ نَذِيرٞ لَّيَكُونُنَّ أَهۡدَىٰ مِنۡ إِحۡدَى ٱلۡأُمَمِۖ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ

(४२) तथा इन काफ़िरों ने बड़ी पक्की सौगन्ध खायी थी कि यदि उनके पास कोई डराने वाला आया तो वह प्रत्येक समुदाय से अधिक मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले बनेंगे ।[4] फिर

---

[1]كَرَاهَةَ أَنْ تَزُولَا अथवा لِئَلَّا تَزُولَا यह अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य तथा कारीगरी का वर्णन है । कुछ ने कहा कि अभिप्राय यह है कि उनके शिर्क की माँग तो यह है कि आकाश तथा धरती अपनी स्थिति पर स्थिर न रहें अपितु टूट-फूट का शिकार हो जायें, जैसे आयत ﴿تَكَادُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِنۡهُ وَتَنشَقُّ ٱلۡأَرۡضُ وَتَخِرُّ ٱلۡجِبَالُ هَدًّا ۞ أَن دَعَوۡاْ لِلرَّحۡمَٰنِ وَلَدٗا﴾ (मरियम-९०-९१) का भावार्थ है ।

[2]यह अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य के साथ उसकी पूर्ण दया है कि वह आकाश तथा धरती को थामे हुए है और उन्हें अपने स्थान से हिलने-डोलने नहीं देता अन्यथा पलक झपकते विश्व की व्यवस्था तितर-बितर हो जाती, क्योंकि यदि वह उन्हें थामे न रखे तथा अपने स्थान से फेर दे तो अल्लाह के सिवाय कोई नहीं है जो उनको थाम ले إِنْ أَمْسَكَهُمَا में إِنْ 'नहीं' के अर्थ में है अल्लाह ने अपने इस अनुग्रह तथा लक्षण की चर्चा दूसरे स्थान पर भी की है, जैसे ﴿وَيُمۡسِكُ ٱلسَّمَآءَ أَن تَقَعَ عَلَى ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦٓ﴾ "वही आकाश को धरती पर गिरने से रोके हुए है, किन्तु जब उसका आदेश होगा ।" (अल-हज्ज-६५) तथा ﴿وَمِنۡ ءَايَٰتِهِۦٓ أَن تَقُومَ ٱلسَّمَآءُ وَٱلۡأَرۡضُ بِأَمۡرِهِۦ﴾ "उसके चिन्हों में से है कि आकाश तथा धरती उसके आदेश से स्थापित हैं ।" (अर-रूम-२५)

[3]इतने सामर्थ्यों के पश्चात वह सहनशील है, अपने बन्दों को देखता है कि वह कुफ़्र तथा शिर्क एवं अवज्ञा कर रहे हैं फिर भी उनकी पकड़ में शीघ्रता नहीं करता अपितु ढील देता है, तथा क्षमाशील भी है, कोई क्षमा माँगता है और उसके सदन में झुक जाता है, पश्चाताप तथा क्षमा-याचना एवं लज्जा दिखाता है तो वह क्षमा कर देता है ।

[4]इसमें अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी बनाकर भेजे जाने से पहले यह मूर्तियों के पुजारी कसमें खा खाकर कह रहे थे कि यदि हमारी ओर कोई ईश्दूत आया तो हम उसका स्वागत करेंगे तथा उस पर ईमान लाने में एक आदर्श कर्म प्रस्तुत करेंगे । यह विषय अन्य स्थानों पर भी वर्णित है, जैसे सूरः

نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۙ﴿٤٢﴾

जब उनके पास एक पैग़म्बर आ पहुँचे [1] तो उनकी घृणा में ही प्रगति हुई।

اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

(४३) संसार में अपने को बड़ा समझने के कारण [2] तथा उनके बुरे प्रयत्नों के कारण [3] तथा बुरे प्रयत्न करने वालों का दण्ड उन प्रयत्न करने वालों को ही भुगतना पड़ता है,[4] तो क्या ये उसी नीति की प्रतीक्षा में हैं जो पूर्व के लोगों के साथ होती रही है।[5] तो आप अल्लाह की रीति में कभी परिवर्तन नहीं पायेंगे,[6] तथा आप अल्लाह की रीति को कभी स्थानान्तरित होती हुई न पायेंगे।[7]

अनआम-१५६,१५७ तथा सूरः *अस्साफ़्फ़ात*-१६७-१७०)

[1]अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी ओर नबी बनकर आ गये जिनके लिये वह कामना कर रहे थे।

[2]अर्थात आपकी नबूअत (दूतत्व) पर ईमान लाने (विश्वास करने) के स्थान पर इंकार एवं विरोध का मार्ग केवल अहंकार एवं दुष्टता के कारण अपना लिया।

[3]तथा बुरा उपाय अर्थात धोखा-धड़ी एवं बुरे कर्म के कारण किया।

[4]अर्थात यह धोखा-धड़ी करते हैं, किन्तु यह नहीं जानते कि बुरे उपाय का परिणाम बुरा होता है, तथा उसका अन्ततः धोखेबाज़ों पर ही पड़ता है।

[5]अर्थात क्या यह अपने कुफ़्र, शिर्क तथा रसूल के विरोध एवं मुसलमानों को दुख पहुँचाने पर अड़े रहकर इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन्हें भी उसी प्रकार नाश किया जाये जिस प्रकार पिछले समुदायों को ध्वस्त कर दिया गया ?

[6]अपितु यह इसी प्रकार प्रचलित है तथा प्रत्येक झुठलाने वाले का भाग्य विनाश है, अथवा बदलने से तात्पर्य यह है कि कोई अल्लाह की यातना को दया से बदलने पर सामर्थ्यवान नहीं।

[7]अर्थात कोई अल्लाह के प्रकोप को दूर करने वाला अथवा उसकी दिशा फेरने वाला नहीं है, अर्थात जिस समुदाय को अल्लाह प्रकोप से ध्वस्त करना चाहे कोई उसका मुख किसी

(४४) क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं जिसमें वह देखते-भालते कि जो लोग उनसे पूर्व गुज़रे हैं उनका परिणाम क्या हुआ, यद्यपि शक्ति में वे लोग इनसे अधिक थे, तथा अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई वस्तु उसे हरा दे न आकाशों में तथा न धरती में। वह अत्यन्त ज्ञान वाला सामर्थ्यवान है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

(४५) तथा यदि अल्लाह (तआला) लोगों को उनके कर्मों के कारण तुरन्त पकड़ने लगता तो समस्त धरती पर एक प्राणी भी न छोड़ता,[1] परन्तु अल्लाह (तआला) उनको एक नियमित समय तक अवसर प्रदान कर रहा है,[2] तो जब उनका समय आ पहुँचेगा तो अल्लाह (तआला) अपने बन्दों को स्वयं देख लेगा।[3]

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

अन्य समुदाय की ओर फेर दे, किसी में यह शक्ति नहीं। इस रीति के वर्णन से अभिप्राय अरब के मूर्तिपूजकों को डराना है कि अभी समय है, वह कुफ़्र (इंकार) तथा शिर्क (मूर्तिपूजा) को त्याग करके ईमान लायें अन्यथा वह अल्लाह की इस रीति से बच नहीं सकते देर-सवेर उसके चक्र में पड़कर रहेंगे। कोई इस ईश्वरीय विधान को बदलने पर सामर्थ्यवान है न फेरने पर।

[1]इन्सानों को तो उनके पापों के बदले तथा जानवरों को इन्सानों के अशुभ के कारण। अथवा भावार्थ यह है कि समस्त जगतवासियों को नाश कर देता, इन्सानों को भी तथा जिन जानवरों तथा आजीविकाओं के वे स्वामी हैं, उनको भी। अथवा अभिप्राय यह है कि आकाश से वर्षा का क्रम बन्द कर देता जिससे धरती पर चलने वाले सभी जीवधारी मर जाते।

[2]यह नियमित अवधि संसार में भी सम्भव है तथा प्रलय का दिन तो है ही।

[3]अर्थात उस दिन उनका लेखा-जोखा लेगा तथा प्रत्येक को उसके कर्मों का पूरा प्रतिकार देगा। ईमानदार तथा आज्ञाकारी को पुण्य तथा शुभफल तथा काफ़िर एवं अवज्ञाकारी को यातना तथा कुफल। इसमें ईमान वालों के लिये सांत्वना तथा काफ़िरों के लिये चेतावनी एवं धमकी है।

सूरतु यासीन-३६

سُوْرَةُ يٰسٓ

सूर: यासीन* मक्का में अवतरित हुई, इसमें तिरासी आयतें एवं पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं कृपालु है। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) यासीन ।[1] يٰسٓ ①

(२) सौगन्ध है आदर्श (एवं सुदृढ़) क़ुरआन की ।[2] وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ②

(३) कि निश्चय आप पैग़म्बरों में से हैं ।[3] اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ③

(४) सीधे मार्ग पर हैं ।[4] عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ④

**सूर: यासीन* की विशेषता में बहुत सी रवायतें प्रसिद्ध (प्रचलित) हैं। इन्हीं में जैसे, यह क़ुरआन का दिल है, इसे उस पर पढ़ो जो मौत के निकट हो, इत्यादि। किन्तु वर्णन क्रम (सनद) के आधार पर कोई सही नहीं, कुछ पूर्णत: बनावटी हैं अथवा कुछ क्षीण हैं। "क़ुरआन के हृदय" वाली रवायत (वर्णन) को हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने बनावटी (गढ़ी हुई) कहा है (अद-दईफ़ा हदीस नम्बर १६९)

[1]कुछ ने इसका अर्थ 'हे मनुष्य' अथवा हे मानव किया है, कुछ ने इसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुभनाम तथा कुछ ने उसे अल्लाह के शुभ नामों में से बताया है, किन्तु यह सभी कथन तर्कहीन (अप्रमाणित) हैं। यह भी उन हरूफ़े मुक़त्तआत (विभिन्न अक्षरों) में ही से है जिसका अर्थ तथा भावार्थ अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता।

[2]अथवा सुदृढ़ क़ुरआन की जो वाक्य क्रम तथा अर्थ में सुदृढ़ है, वाव (व) अक्षर सौगन्ध के लिये है। आगे शपथ का उत्तर है।

[3]मुश्रेकीन (मूर्तिपूजक) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (आपके ईशदूत होने) को इंकार करते थे तथा कहते थे कि﴿لَسْتَ مُرْسَلًا﴾(अर-रअद-४३) "तू तो अल्लाह की ओर से संदेशवाहक ही नहीं है" अल्लाह ने उनके उत्तर में पवित्र क़ुरआन की शपथ लेकर फ़रमाया, "आप निश्चय उसके पैग़म्बरों में से हैं।" इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा एवं महानता का प्रदर्शन है। यह भी आप के गुणों एवं विशेषताओं में से है कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को प्रमाणित करने के लिए शपथ ग्रहण की। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[4]यह إِنَّكَ की दूसरी 'ख़बर' (विधेय) है, अर्थात आप उन पैग़म्बरों के पथ पर हैं जो आपसे

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٥

(५) (यह क़ुरआन अल्लाह) प्रभुत्वशाली अत्यन्त दयालु की ओर से अवतरित किया गया है ।[1]

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ أُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٦

(६) ताकि आप ऐसे लोगों को सावधान करें जिनके पूर्वज नहीं डराये गये थे, तो (उसी कारण से) ये लोग अनभिज्ञ हैं ।[2]

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٧

(७) उनमें से अधिकतर लोगों पर (यह) बात सिद्ध हो चुकी है, अतः ये लोग ईमान नहीं लायेंगे ।[3]

पहले गुज़र चुके हैं, अथवा ऐसे मार्ग पर हैं जो सीधा एवं लक्ष्य (स्वर्ग) तक पहुँचाने वाला है ।

[1]अर्थात उस अल्लाह की ओर से अवतरित की हुई है जो प्रभुत्वशाली है, अर्थात उसका इंकार तथा उसके रसूल को झुठलाने वाले से बदला लेने पर सामर्थ्य रखता है । رحیم है अर्थात जो उस पर ईमान लायेगा तथा उसका भक्त बनकर रहेगा उसके लिये अत्यन्त दयालु है ।

[2]अर्थात आपको रसूल इसलिए बनाया है तथा यह किताब (पवित्र क़ुरआन) इसलिये उतारा है कि आप उस समुदाय को सावधान करें जिनमें आपसे पहले कोई सावधान करने वाला नहीं आया, इसलिए एक समय से यह सत्य धर्म से अनभिज्ञ हैं । यह विषय पहले भी कई स्थानों पर गुज़र चुका है कि अरबों में आदरणीय इस्माईल के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले सीधे कोई नबी नहीं आया, यहाँ भी उसी विषय का वर्णन किया गया है ।

[3]जैसे अबू जहल, अबू लहब, उतबा तथा शैबा आदि । बात सिद्ध होने का अभिप्राय अल्लाह तआला का यह वचन है कि "मैं नरक को जिन्नों तथा इन्सानों से भर दूँगा ।" (*अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰अस्सजदा-१३*) शैतान को भी सम्बोधित करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया था, "मैं नरक को तुझसे तथा तेरे अनुगामियों से भर दूँगा ।" (*साद-८४*) अर्थात इन लोगों ने शैतान के पीछे लगकर स्वयं को नरक का पात्र बना लिया । अल्लाह ने तो उन्हें इच्छा का अधिकार एवं स्वाधीनता प्रदान किया था । किन्तु उन्होंने इस का ग़लत प्रयोग किया तथा यूँ नरक का ईंधन बन गये यह नहीं कि अल्लाह ने बलपूर्वक उनको ईमान से वंचित रखा क्योंकि विवश करने की दशा में तो वह दण्ड के अधिकारी ही न हो पाते ।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ⑧

(८) हमने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिये हैं फिर वह ठुड्डियों तक हैं जिससे उनके सिर ऊपर की ओर उलट गये हैं ।[1]

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ⑨

(९) तथा हमने एक आड़ उनके सम्मुख कर दी तथा एक आड़ उनके पीछे कर दी,[2] जिससे हमने उनको ढांक दिया[3] तो वे नहीं देख सकते ।

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑩

(१०) तथा उनके विषय में आपका डराना अथवा न डराना दोनों समान हैं, ये ईमान नहीं लायेंगे ।[4]

إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ⑪

(११) बस आप तो केवल ऐसे व्यक्ति को डरा सकते हैं[5] जो शिक्षा के अनुरूप चले तथा रहमान (अल्लाह) से बिन देखे डरे, तो आप

---

[1]जिसके कारण इधर-उधर देख सकते हैं न सिर झुका सकते हैं अपितु वह सिर ऊपर किये हुए एवं आँखें नीची किये हुए हैं । यह उनके सत्य को स्वीकार न करने तथा व्यय न करने की उपमा है । यह भी सम्भव है कि यह उनकी नरक की यातना की स्थिति का वर्णन हो । (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2]अर्थात सांसारिक जीवन उनके लिए सुशोभित कर दिया गया, यह जैसे उनके सामने की आड़ है जिसके कारण वह सांसारिक स्वार्थ के सिवाय कुछ नहीं देखते तथा यही वस्तु उनके तथा उनके ईमान के बीच आड़ हैं । आख़िरत का ध्यान उन के मन में आना असम्भव हो गया, यह मानो उनके पीछे की आड़ है जिसके कारण वह क्षमा माँगते हैं न शिक्षा ग्रहण करते हैं क्योंकि परलोक का कोई भय ही उनके अन्त:करण में नहीं है ।

[3]अथवा उनकी आँखों को ढांक दिया, अर्थात रसूल से बैर तथा उसके सत्योपदेश से घृणा ने उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी अथवा उन्हें अंधा कर दिया है जिससे वह देख नहीं सकते । यह उनकी दशा की दूसरी उपमा है ।

[4]जो अपनी करतूतों के कारण पथभ्रष्टता के उस स्थान पर पहुँच जायें, उनको सावधान करना व्यर्थ होता है ।

[5]अर्थात सावधान करने से केवल उसको लाभ पहुँचता है ।

उसको क्षमा एवं उत्तम प्रतिदान की शुभसूचना सुना दीजिए।

(१२) निःसंदेह हम मुर्दों को जीवित करेंगे,[1] तथा हम लिखते जाते हैं वे कर्म भी जिनको लोग आगे भेजते हैं [2] तथा उनके वह कर्म

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ

---

[1]अर्थात क़यामत के दिन। यहाँ मुर्दों को जीवित करने की चर्चा से यह संकेत करना उद्देश्य है कि अल्लाह तआला काफ़िरों में जिस का दिल चाहता है जीवित कर देता है जो कुफ़्र तथा कुमार्ग होने के कारण मृत हो चुके होते हैं, फिर वह संमार्ग तथा ईमान को अपना लेते हैं।

[2] مَا قَدَّمُوا से वह कर्म अभिप्राय है जो मनुष्य अपने जीवन में करता है तथा آثَارَهم से वह कर्म जिनके व्यवहारिक नमूने (अच्छे व बुरे) वह जगत में छोड़ जाता है तथा उसके निधन के पश्चात उसके अनुसरण में लोग वे कर्म करते हैं। जैसे हदीस में है, "जिसने इस्लाम में कोई पुनीत तरीका जारी किया उसके लिए उसका प्रतिकार भी है तथा उसका भी जो तत्पश्चात उस पर कार्यरत होगा बिना इसके कि उनमें से किसी के प्रतिकार में कमी हो, तथा जिसने बुरी रीति निकाली उस पर उसके अपने पाप का भी बोझ होगा और उसका भी जो तत्पश्चात कर्म करेगा बिना इसके कि उनमें से किसी के भार में कमी हो। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात) इसी प्रकार यह हदीस है कि जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का क्रम समाप्त हो जाता है अतिरिक्त तीन वस्तुओं के। एक ज्ञान, जिससे लोग लाभ प्राप्त करें, दूसरा नेक सन्तान, जो मृत के लिये प्रार्थना करे, तीसरा संचालित दान (सदक़ः जारियह) जिससे उसके मरने के बाद भी लोग लाभ प्राप्त करते रहें। (सहीह मुस्लिम, किताबुल वसीयत, बाबु मा यलहकुल इन्सान मिनस स्वाबे बाद वफ़ातिहि) दूसरा अभिप्राय آثَارهم का पद-चिन्ह है अर्थात इन्सान अच्छाई व बुराई के लिये जो यात्रा करता है तथा एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है तो पगों के यह चिन्ह भी लिखे जाते हैं। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में मस्जिदे नबवी के पास कुछ ख़ाली जगह थी तो बनू सलमा ने वहाँ स्थानान्तरण करना चाहा। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान में यह बात आई तो आपने मस्जिद के समीप उन्हें स्थानान्तरित होने से रोक दिया तथा कहा. «دِيَارَكُمْ تُكْتَبْ آثَارُكُمْ» (दो बार फ़रमाया) अर्थात तुम्हारे घर यद्यपि दूर हैं किन्तु वहीं रहो, जितने पग चलकर आते हो वह लिखे जाते हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबु कसरतिल ख़ुता इलल मसाजिद) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं यह दोनों अर्थ अपनी जगह सही हैं, इनमें प्रतिकूलता नहीं है, वरन् इसके दूसरे अर्थ में कड़ी चेतावनी है इसलिए कि जब पद चिन्ह तक लिख जाते हैं तो इन्सान जो अच्छा-बुरा नमूना छोड़ जाये जिसका लोग अनुसरण करें तो वह समुचित

فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾

भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं, तथा प्रत्येक बात को हमने एक खुली किताब में संकलन कर रखा है ।[1]

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा आप उनके समक्ष एक उदाहरण (अर्थात एक) बस्ती वालों की कथा (उस समय की) वर्णन कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई रसूल आये ।[2]

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) जबकि हमने उनके पास दो को भेजा, तो उन लोगों ने (प्रथम) उन दोनों को झुठलाया फिर हमने तीसरे से समर्थन दिया तो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गये हैं ।[3]

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह साधारण मनुष्य हो तथा दयालु ने कोई वस्तु अवतरित नहीं की, तुम तो केवल झूठ बोलते हो ।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) उन रसूलों ने कहा कि हमारा प्रभु जानता है कि वस्तुतः हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं ।

रूप से लिखे जायेंगे ।

[1]इससे अभिप्राय लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है तथा कुछ ने कर्मपत्र तात्पर्य लिये हैं ।

[2]ताकि मक्कावासी समझ लें की आप कोई अद्भुत ईश्दूत (नबी) नहीं हैं अपितु यह ईश्दूतों का क्रम आदि से चला आ रहा है ।

[3]यह तीन रसूल कौन थे भाष्यकारों ने उनके विभिन्न नाम वर्णन किये हैं किन्तु नाम प्रमाणित माध्यम से सिद्ध नहीं हैं । कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह ईश्दूत ईसा के भेजे हुए दूत थे जो उन्होंने अल्लाह के आदेश से एक बस्ती में धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए भेजे थे । वस्ती का नाम अंताकिया था ।

وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ ⑰

(१७) तथा हमारा कर्तव्य तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

قَالُوٓا۟ إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا۟ لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑱

(१८) उन्होंने कहा कि हम तो तुम्हें अशुभ समझते हैं।[1] यदि तुम न रूके तो हम तुम्हें पत्थरों से मारकर तुम्हारा कार्य समाप्त कर देंगे तथा तुमको हमारी ओर से कड़ा कष्ट पहुँचेगा।

قَالُوا۟ طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ ۚ أَئِن ذُكِّرْتُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ⑲

(१९) उन (रसूलों) ने कहा कि तुम्हारा अशुभ तो तुम्हारे साथ ही लगा हुआ है,[2] क्या उसको (अशुभ समझते हो) कि तुमको शिक्षा दी जाये, बल्कि तुम तो सीमा उल्लंघन करने वाले हो।

وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا ٱلْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُوا۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ⑳

(२०) तथा एक व्यक्ति उस नगर के अन्तिम छोर से दौड़ता हुआ आया, कहने लगा कि हे मेरे समुदाय के लोगो इन रसूलों (संदेष्टाओं) के मार्ग पर चलो।[3]

ٱتَّبِعُوا۟ مَن لَّا يَسْـَٔلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ㉑

(२१) ऐसे लोगों के मार्ग पर चलो जो तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगते तथा वे सत्य-मार्ग पर हैं।

---

[1]संभव है कि कुछ लोग ईमान लाये हों, जिनको उन्होंने نعوذ بالله रसूलों का अशुभ कहा, अथवा वर्षा का क्रम स्थगित हो गया हो तो वह समझे हों कि यह इन रसूलों का अशुभ है, نعوذ بالله من ذلك जैसे आज भी दुरात्मा तथा धर्म एवं धर्मविधान से वंचित लोग ईमानदार तथा सदाचारी लोगों ही को अशुभ समझते हैं।

[2]अर्थात वह तो तुम्हारे कुकर्मों का परिणाम है जो तुम्हारे साथ ही है न कि हमारे साथ।

[3]यह व्यक्ति मुसलमान था, जब उसे पता चला कि जाति पैग़म्बरों के निमन्त्रण को नहीं अपना रही है तो उसने आकर रसूलों का पक्ष लिया तथा उनके अनुसरण पर प्रोत्साहित किया।